सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 25/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जुलाई, 2017 वर्ष 16 अंक 05

राज़ी तुम से रब होगा

न्याय करो इन्साफ़ करो राज़ी तुम से रब होगा
जनहित के तुम काम करो राज़ी तुम से रब होगा
शान्ति यहां स्थापित हो इस का तुम प्रयास करो
शान्ति भंग न होने दो राज़ी तुम से रब होगा
हिन्दू हो या मुस्लिम हो जो भी हो तुम मानव हो
मानवता का पाठ पढ़ो राज़ी तुम से रब होगा
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई यह तो सब हैं भाई भाई
व्यथा हरो तुम भाई की राज़ी तुम से रब होगा
जग का जो निर्माता है वही है सब का पालनहार
केवल उसी को पूजो तुम राज़ी तुम से रब होगा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
रबी की रिजा	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
हज और उमरा	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	12
एलान	इदारा	17
एकत्व तथा सार्थकता	हज़रत मौलाना राबे हसनी नदवी	18
मुसलमानों को मुसलमान बनने	मौलाना शम्सुल हक नदवी	20
देश को अब नैतिक और	शबाना अली	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
मुस्लिम खवातीन–मसाएल	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	27
अपने जीवन में माता–पिता का	मुहम्मद नफीस हरदोई	33
जीवन के अंधियारे पथ (पद्य)	इदारा	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद–

ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे के मालों को अनुचित रूप से न खाओ सिवाय इसके कि आपस की सहमति से कोई व्यापार हो, और एक दूसरे का खून मत करो बेशक अल्लाह तुम पर बहुत दयालु है(29) और जो भी सरकशी (उदण्डता) और अत्याचार के साथ ऐसा करेगा तो हम उसको आग में झोकेंगे और यह अल्लाह के लिए कुछ कठिन नहीं[1](30) अगर तुम उन बड़े पापों से बचोगे जिन से तुम्हें रोका गया है तो हम तुम्हारी गलतियों पर पर्दा डाल देंगे और तुम्हें सम्मान की जगह प्रवेश कराएंगे[2](31) और अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर जो बड़ाई दी है उसकी लालच में मत पड़ो, मर्दों के लिए उनके किये के अनुसार हिस्सा है और औरतों के लिए उन के किए के अनुसार, और अल्लाह से उसकी दया (फ़ज़्ल) मांगते रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ से खूब अवगत है[3](32) और हर माल के हमने कुछ वारिस निर्धारित कर दिये हैं जो भी मां—बाप और निकटतम नातेदार छोड़ जाएं और जिनसे तुम्हारा समझौता है उनको उनका हिस्सा दे दो बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है[4](33) मर्द औरतों के ज़िम्मेदार हैं इसलिए कि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इसलिए कि मर्दों ने अपना माल ख़र्च किया है तो भली औरतें वे हैं जो आज्ञाकारी हों, अल्लाह की रक्षा से पीठ पीछे—पीछे रक्षा करने वाली हों और जिन औरतों की सरकशी का तुम्हें डर हो तो उनको समझाओ और उनके बिस्तर अलग कर दो और उनको चेतावनी दो फिर अगर वे तुम्हारी बात मान लें तो उनके विरुद्ध किसी रास्ते की खोज में मत पड़ो बेशक अल्लाह बहुत ही बुलंद और अधिक बड़ाई वाला है[5](34) और अगर तुम्हें उन दोनों के आपस के तोड़ का डर हो तो एक फ़ैसला करने वाला मर्द के परिवार से और एक फ़ैसला करने वाला औरत के परिवार से खड़ा करो अगर वे दोनों सुधार चाहेंगे तो अल्लाह तआला दोनों में जोड़ पैदा कर देगा, बेशक अल्लाह खूब जानने वाला पूरी ख़बर रखने वाला है[6](35) और अल्लाह की बंदगी करते रहो और उसके साथ किसी को साझीदार मत बनाओ और मां—बाप के साथ और नातेदारों, अनाथो, मोहताजों, रिश्तेदार, पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी, साथ बैठने वाले, यात्री और गुलामों के साथ भी अच्छा व्यवहार करो, बेशक अल्लाह तआला इतराने वाले, अकड़ने वाले को पसंद नहीं करता[7](36) जो कंजूसी करते हैं और

लोगों को कंजूसी सिखाते हैं और उनको अल्लाह ने जो अपनी कृपा से दे रखा है उसको छिपाते हैं और हमने इनकार करने वालों के लिए अपमान जनक अज़ाब तैयार कर रखा है[8](37) और जो अपने मालों को लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं न आखिरत के दिन पर और शैतान जिस का दोस्त हुआ तो वह बहुत बुरा दोस्त हुआ(38) और उनको क्या नुकसान था अगर वे अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान ले आते और उनको अल्लाह ने जो दिया है उसमें से खर्च करते और अल्लाह उनको ख़ूब जानता है(39) अल्लाह तआ़ला ज़र्रा बराबर (कण मात्र) भी कमी नहीं करता और अगर सद्कर्म (नेकी) होगा तो उसका बदला दो गुना कर देगा और अपने पास से बड़ा बदला प्रदान करेगा[9](40) तो (क्या हाल होगा) जब हम हर उम्मत से गवाह लाएंगे और उन पर आप को गवाह (बना कर पेश) करेंगे[10](41)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. अब कोई यह न समझ बैठे कि हम मुसलमान हैं कि तो दोज़ख़ में कैसे जाएंगे, अल्लाह तआला मालिक व अधिकारी हैं उनको न्याय से कौन रोक सकता है।

2. बड़े पापों के करने के बाद तौबा ज़रूरी है और बड़े गुनाह न हों तो छोटे–मोटे पापों को अल्लाह बिना तौबा के भी माफ़ कर देंगे।

3. औरतों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया था कि हर जगह मर्दों को ही संबोधित किया जाता है औरतों का उल्लेख नहीं होता और मीरास (मृतक संपत्ति) में मर्दों को दोहरा हिस्सा मिलता है, उसी का जवाब दिया गया है कि हर एक को उसके कर्म के अनुसार ही बदला मिलेगा इसमें कोई फर्क़ नहीं, बाकी हर एक को उसकी शारीरिक बनावट को देखते हुए ज़िम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

4. शुरु में जब एक–एक दो दो लोग मुसलमान होते थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो दो मुसलमानों को आपस में भाई बना दिया, वही एक दूसरे के वारिस होते, जब नातेदार मुसलमान हुए तो आदेश हुआ कि नाते के आधार पर ही मीरास (मृतक संपत्ति) बांटी जाए और वह आयत उतरी "वउलुल अरहामि बअ्ज़ुहुम औला बिबअ्ज़" कि रिश्तेदार आपस में एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं और आदेश हुआ कि जिससे भाई चारा हो चुका है उनके साथ जीवन में सद्व्यवहार किया जाता रहे और मरते समय कुछ वसीयत कर दी जाए।

5. मर्द ज़िम्मेदार हैं तो औरत को जायज़ चीज़ों से उनकी बात माननी चाहिए अगर औरत बुरा व्यवहार करे तो मर्द पहले समझाए फिर उसी घर में अलग सोए फिर न माने तो चेताए अगर देखने से लगे कि मान लिया तो फिर खोद कुरेद में न पड़े।

6. पहला चरण तो यह है कि पति–पत्नी ही सुधार का प्रयास करें यह न हो सके तो

शेष पृष्ठ....17 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

अहंकार और अवज्ञाकारी की हुरमतः-

हजरत अ़याज़ बिन हिमार रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला ने मुझे "वही" की है कि तवाजोअ़ (नम्रता) इख्तियार करो और कोई किसी पर ज़ियादती न करे, न कोई किसी पर अहंकार करे। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब कोई शख्स कहे कि लोग हलाक व बर्बाद हुए तो कहने वाला उस से ज़ियादा हलाक और बर्बाद हुआ। (बुखारी) अर्थात घमण्ड की वजह से लोगों के ऐब बयान कर के कहे कि वह बर्बाद हो गये तो वह खुद बर्बाद हुआ, वजह से कि लोगों की गीबत की और उनको बुरा जाना, घटिया समझा और अपने को सबसे बेहतर समझा और लोगों की बेदीनी देख कर अफसोस के साथ कहे तो कोई हरज नहीं।

तीन दिन से ज़ियादा मुसलमानों का एक दूसरे को मुक़ातअ (बहिष्कार) की मुमानिअतः-

हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कि आपस के तअल्लुकात खत्म न करो, एक दूसरे से बिगाड़ न रखो, आपस में द्वेष न रखो, और आपस में एक दूसरे पर हसद न करो, और अल्लाह के बंदे भाई भाई हो जाओ और किसी मुसलमान पर जाइज नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़ियादा बोलना छोड़ दे। (बुखारी)

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किसी मुसलमान के लिए जाइज नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन रात से जियादा अलग रहे और मुलाकात के समय एक दूसरे से मुंह फेर लें और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम की शुरुआत करे।

(बुखारी मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सोमवार और जुमेरात के दिन अल्लाह तआला हर उस शख्स को बख्श देता है जिस ने शिर्क नहीं किया, मगर जिन दो लोगों के मध्य रंजिश होती है तो अल्लाह तआला फरमाता है कि इन को छोड़ दो जब तक यह सुलह न करे लें।

(मुस्लिम)

शेष पृष्ठ....11 पर

रब की रिज़ा, मन को शांति तथा शरीर को स्वास्थ्य देने वाली उपासना "नमाज़"

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

नमाज़ पढ़ने से पहले आप का विश्वास यह होना चाहिए कि उपासना योग्य केवल एक ही व्यक्तित्व है कोई और नहीं जिस को हम अल्लाह कहते हैं, कोई उस को गाड कहता है, तो कोई ईश्वर, उसी ने यह जगत निर्मित किया है, यह सूर्य, यह चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश, नदी, पहाड़ आदि उसी ने निर्मित किये हैं, यह सब उस के दास हैं, मनुष्य, जिन्न फरिश्ते और तमाम जीव जन्तु उसी ने पैदा किये हैं, उसने अपने आदेश निर्देश तथा उपासनाओं की विधियों को बताने और जीवन नियम सिखाने हेतु समय समय पर अपने पैगम्बर (सन्देष्टा) भेजे और सब के अन्त में अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा, अल्लाह सर्व शक्तिमान है वह जिसे जो देना चाहे उसे कोई शक्ति मना नहीं कर सकती और जिसे कुछ न देना चाहे तो कोई शक्ति उसे नहीं दे सकती, नमाज़ पढ़ने के लिए यह विश्वास आवश्यक है जिन को हम संक्षेप में यूं कहते हैं— अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके रसूल हैं। क्या ऐसा विश्वास जिस से मन को जो शक्ति तथा शांति मिलती है क्या किसी और विश्वास से मिल सकती है?

नमाज़ पढ़ने वाले का शरीर हर प्रकार की गन्दगियों से पाक होना चाहिए यदि उसने अपनी पत्नी से सहवाह किया हो या सोते जागते वीर्य का निस्कासन हो गया हो तो उसके लिए नमाज़ से पहले इस्लामिक विधि से नहाना आवश्यक है, यदि उसने मलमूत्र किया हो या सो गया हो, यहां तक कि यदि उस की गुदा द्वारा हवा का निस्कासन हुआ हो तो उसके लिए नमाज़ से पहले इस्लामिक विधि से वुज़ू करना आवश्यक है वुज़ू में पवित्र जल से कुहनियों समेत दोनों हाथ धोना, पूरा मुखड़ा धोना, दोनों पांव टख़्नों समेट धोना और भीगा हाथ सिर पर फेरना आवश्यक है।

नमाज़ पढ़ने वाले के शरीर पर उचित वस्त्र का होना आवश्यक है और वस्त्र पवित्र हो, स्वच्छ हो, और जिस स्थान पर नमाज़ पढ़ी जाय वह स्थान भी स्वच्छ तथा पवित्र हो, क्या स्वच्छता की यह उत्तम विधि तथा उत्तम शिक्षा नहीं है? क्या इससे नमाज़ी को स्वास्थ्य न प्राप्त होगा? अवश्य होगा।

नमाज़ दो प्रकार की होती है— (1) नफ़्ल नमाज़ें, (सुन्नत नमाज़ें भी इस में आ गई) यह नमाज़ें घर पर पढ़ी जाती हैं या पढ़ी जा सकती हैं इससे घर को स्वच्छ रखने की शिक्षा मिलती है फिर नमाज़ मर्दों तथा औरतों सब पर अनिवार्य है और औरतें घर ही में नमाज़

पढ़ती हैं अतः नमाज़ी का घर अनिवार्य रूप से स्वच्छ रहता है और जब नमाज़ी घर के अन्दर को स्वच्छ रखेगा तो घर के बाहर भी स्वच्छता का ध्यान रखेगा।

(2) दूसरे प्रकार की नमाज़ें फर्ज (अनिवार्य) नमाज़ें हैं जो मस्जिद में सामूहिक रूप से पंक्ति बद्ध हो कर पढ़ी जाती हैं, यह पाँच समय, फज्र (प्रातः), जुह्र (दोपहर), अस्र (अप्राह्न), मग़रिब (सूर्यास्त) और ईशा (आधी रात से पहले) पढ़ी जाती हैं, मस्जिद की स्वच्छता अनिवार्य है तथा मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जहां उन के लिए स्वच्छता तथा पवित्रता आवश्यक है वहीं उनके मुख से किसी प्रकार की दुर्गन्ध जैसे धूम्रपान अथवा कच्ची प्याज आदि की दुर्गन्ध न हो क्या स्वच्छता की यह उत्तम शिक्षा नहीं है?

जमाअ़त की नमाज़ में (सामूहिक नमाज़ में) एक इमाम होता है, सारे नमाज़ी पंक्तिबद्ध इस प्रकार खड़े होते हैं कि दो नमाज़ियों के बीच में अंतर न हो, मिल मिल कर खड़े होते हैं, पंक्ति सीधी हो, पंक्ति में लोग आगे पीछे न हों, कोई कर्मचारी हो या अधिकारी, निर्धन हो या धनवान, सय्यिद हो या धुन्या जिस को जहां जगह मिल गई वहां खड़ा होगा कोई उसे हटा नहीं सकता अलबत्ता स्त्रियां पुरुषों के बीच में नहीं खड़ी हो सकतीं उन की पंक्तियां पुरुषों की पंक्तियों के पीछे या पृथक होती हैं, जिस का उचित होना हर बुद्धिमान स्वयं समझ सकता है, अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को मस्जिद से वंचित तो नहीं किया है परन्तु कहा है कि उन की नमाज़ घर में अधिक अच्छी है यही कारण है कि मक्का और मदीना की मस्जिदों (हरमैन) को छोड़ कर सब जगह औरतें घर में नमाज़ पढ़ती हैं। इमाम सबसे आगे खड़ा होता है, कोई इक़ामत कहता है अर्थात सब नमाजियों को सूचित करता है कि नमाज़ होने जा रही है, सब सतर्क हो जाते हैं और जैसे ही इमाम नमाज़ की नीयत करके आवाज़ से अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहता है सब नमाज़ी भी नीयत कर के कानों तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कह कर करबद्ध हो जाते हैं। अब सब के सब परस्पर बात तो क्या, मन में भी अल्लाह के अतिरिक्त के ध्यान से भी बचते हैं और इमाम के अल्लाहु अक्बर पर एक साथ रुकूअ़ करते हैं, झुक जाते हैं, फिर सीधे खड़े हो जाते हैं फिर सज्दे में चले जाते हैं अर्थात नतमस्तक हो जाते हैं। इस प्रकार पूरी नमाज़ पूरी करते हैं, कोई नमाज़ी, नमाज़ का कोई कर्म इमाम से पहले नहीं कर सकता, इमाम की आवाज़ पर नमाज़ का हर काम एक साथ करते हैं फिर जब इमाम सलाम की ध्वनि से दाएं बाएं मुख फेरता है तब सारे नमाज़ी भी सलाम के शब्द से नमाज़ से बाहर आते हैं। ज़रा ध्यान दीजिए क्या जीवन में अनुशासन की यह उच्च शिक्षा नहीं है? एक नमाज़ी जो शुद्ध रूप से जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ता है वह

सदा अनुशासित जीवन बिताता है। क्या ऐसा व्यक्ति समाज में उत्पात और उपद्रव कर सकता है? कदापि नहीं। अब आइये देखें की नमाज़ नमाज़ी को किस प्रकार शक्ति तथा मनोबल प्रदान करती है।

एक नमाज़ी नमाज़ आरम्भ करने से पहले अपने मन को स्वच्छ करता है और सोचता है और कहता है कि मैं उस व्यक्तित्व की ओर अपना मुख तथा मन कर रहा हूं जो आकाशों तथा पृथ्वी का निर्माता और मालिक है फिर मन में सोचता और ज़बान से भी कहता है कि मैं दो रकअ़त या चार रकअ़त नमाज़ पढ़ने जा रहा हूं अगर जमाअत की नमाज़ है तो इमाम के पीछे होने को भी ध्यान में ला कर कानों तक हाथ उठाता है और अल्लाहु अक्बर कह कर करबद्ध हो जाता है अब वह संसार से कट कर अपने पालनहार के समक्ष खड़ा है, और कहता है:—

ऐ अल्लाह हम तेरी पवित्रता का वर्णन करते हैं तेरी प्रशन्सा करते हैं तेरा नाम बरकत वाला है तू ही सर्वश्रेष्ठ है फिर अगर इमाम ध्वनि से (जहरी) नमाज़ पढ़ाता है तो सभी नमाज़ी ध्यान उस की ईश प्रशन्सा का वर्णन सुन्ते हैं और उस के पीछे नमाज़ पूरी करते हैं।

यदि नमाज़ी अकेले नमाज़ पढ़ता है तो देखिए किस प्रकार अपने अल्लाह से प्रार्थना करता है वह कहता है:—

ऐ अल्लाह समस्त प्रशन्साएं तेरे ही लिए उचित हैं तू समस्त आलमों का स्वामी है, बड़ा दयालू महा कृपालू है, लेखा जोखा तथा प्रतिफल के दिन का मालिक है, ऐ अल्लाह हम तेरी ही उपासना करते हैं तुझ ही से मदद मांगते हैं, हम को सीधा मार्ग दिखा वह मार्ग जिस पर चलने वालों को तूने पुरस्कृत किया वह मार्ग नहीं जिस पर चलने वालों पर तेरा प्रकोप हुआ वह मार्ग भी नहीं जिस पर पथ भ्रष्ट लोग चले। ऐ अल्लाह हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ले।

सोचिए और ध्यान दीजिए कि यह प्रार्थना कितनी अनमोल है उस के पश्चात कुछ कुर्आन का पाठ करता है, फिर अल्लाहु अक्बर कह कर रुकूअ़ (झुकने की प्रक्रिया) करता है, दोनों हाथ घुटने पर होते हैं सिर और पीठ एक सीध में होते हैं निगाह पैरों पर होती है (यह एक उत्तम व्यायाम है) साथ ही मन के स्व्च्छता का प्रबन्ध भी है। नमाज़ी इसी दशा में अल्लाह की पवित्रता तथा महानता का कई बार वर्णन करता है फिर यह कहते हुए सीधा खड़ा होता है कि जो भी अल्लाह की प्रशन्सा करता है अल्लाह उस की मागों को स्वीकृत प्रदान करता है, और फिर कहता है ऐ हमारे रब तू ही प्रशन्सा योग्य है, फिर अल्लाह बड़ा है कहते हुए धरती पर माथा इस प्रकार टेकता है कि नाक तथा माथा धरती पर हों, दोनों हाथों की हथेलियां कानों की सीध में धरती पर हों, कोहनियां उठी हुई हों, दोनों घुटने धरती पर हों पैरों के दोनों पंजे धरती से लगे हों, पेट जांघों से लगा

न हो, क्या इस आसन से व्यायाम का उच्च कोट का लाभ न प्राप्त होगा? आवश्य होगा, इसी प्रकार इससे पहले जो सीधे होने की प्रक्रिया थी वह भी व्यायाम की अच्छी शक्ल थी, नतमस्तक की दशा में वह अपने मालिक की पवित्रता तथा महानता का कई बार वर्णन करता है, फिर अल्लाहु अक्बर कह कर ठीक से बैठ जाता है। फिर अल्लाहु अक्बर कह कर सज्दे में चला जाता है और पहले सज्दे की भांति सज्दा पूरा करता है फिर अल्लाहु अक्बर कहते हुए नमाज़ी सीधा खड़ा हो जाता है, अब तक जो किया वह नमाज़ की एक रकअ़त कहलाती है, अब दूसरी रकअ़त का अमल शुरुअ़ हुआ इसी प्रकार नमाज़ी दो तीन, अथवा चार रकअतें पूरी करता है, दो रकअतों के पश्चात उसको विशेष रूप में बैठना होता है, यह विशेष रूप में बैठना भी व्यायाम का एक बहुत अच्छा आसन है, इस बैठने में भी वह अपने रब से इस प्रकार संबोधित होता है:—

"समस्त मौखिक उपासनाएं (जैसे अल्लाह की प्रशंसा, महानता तथा पवित्रता या कुर्आन पाठ आदि), समस्त क्रियात्मक उपासनाएं (जैसे नमाज़, रोज़ा हज जिहाद आदि), समस्त आर्थिक उपसनाएं (जैसे ज़कात, खैरात, निर्धनों की मदद) अल्लाह ही के लिए हैं, ऐ नबी आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों, हम पर भी सलाम हो और तमाम नेक बन्दों पर भी, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं"। इस प्रक्रिया को तशह्हुद पढ़ना कहते हैं, यदि नमाजी ने दो रकअत की नीयत की थी तो इस के पश्चात अपने प्यारे नबी के लिए जिनके द्वारा उस को इस्लाम मिला और अपने पालनहार से जुड़ सका इस प्रकार प्रार्थना करता है:—

"ऐ अल्लाह मुहम्मद पर कृपा कर और मुहम्मद की सन्तान पर भी, कृपा कर वैसी कृपा जैसी तूने इब्राहीम (नबी) पर और उनकी सन्तान पर की थी निः संदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सर्वश्रेष्ठ है ऐ अल्लाह मुहम्मद पर बरकत उतार और मुहम्मद की आल (संतान) पर बरकत उतार जैसी बरकत तूने इब्राहीम पर और उनकी आल पर उतारी निःसंदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सर्वश्रेष्ठ है"।

फिर नमाज़ी कहता है— "ऐ अल्लाह मैंने अपने ऊपर बड़ी अति की है और पापों का क्षमा करने वाला तू ही है और कोई नहीं तू मुझे क्षमा कर, अपनी विशेष क्षमा द्वारा मुझे क्षमा कर दे, मुझ पर दया कर तू तो बड़ा छमा करने वाला दयालू है"। फिर नमाज़ी अपने दाहनी ओर सलाम फेरता है और फिर बाईं ओर सलाम फेर कर के दो रकअत नमाज़ पूरी करता है।

यदि तीन रकअत वाली नमाज़ है तो तशह्हुद पढ़ कर अल्लाहु अक्बर कहते हुए सीधा खड़ा हो जाता है और तीसरी रकअत पूरी कर के फिर

बैठ कर तशह्हुद पढ़ता है, प्यारे नबी के लिए और अपने लिये पहले की तरह प्रार्थना कर के सलाम फेरता है यदि नमाज चार रकअ़त वाली हुई तो तशह्हुद के पश्चात खड़ा हो कर बकीया दो रकअतें पूरी करता है और अन्त में तशह्हुद दुरूद और दुआ पढ़ कर सलाम पढ़ कर नमाज़ से बाहर आता है।

नमाज़ी जब फर्ज नमाजें इमाम के पीछे पढ़ता है तो खड़े होने की दशा में कुर्आन का पाठ नहीं करता अपितु इमाम का पाठ उनके पीछे पढ़ने वालों का पाठ माना जाता है। बाकी सारी चीज़ें इमाम भी पढ़ता है और उसके मुकतदी (पीछे पढ़ने वाले) भी पढ़ते हैं।

यह बात याद रखने की है कि पूरी नमाज़ अरबी भाषा ही में पढ़ी जाती है अर्थात नमाज़ के समस्त शब्द अरबी भाषा ही में होते हैं यदि किसी और भाषा में उनका अनुवाद पढ़ा गया तो नमाज़ न होगी, नमाज़ी यदि नमाज़ के शब्दों का अर्थ जानता है तो अच्छी बात है नहीं समझता है तो यह समझ कर वह शब्द बोले कि अल्लाह का ऐसा ही आदेश है इस आदेश का पालन करने से उसको अधिक सवाब मिलेगा। परन्तु यदि सम्भव हो तो अरबी भाषा का इतना ज्ञान प्राप्त करे कि नमाज़ के शब्दों का अर्थ समझ सके। इस लेख में नमाज़ की पूरी व्याख्या नहीं की जा सकी है। परन्तु जितना बयान किया गया है उससे आप अंदाज़ा लगाएं कि क्या इस उपासना का कोई बदल है? नमाज़ से नमाज़ी के मन की वास्तविक शांति प्राप्त होती है, नमाज़ से नमाज़ी को वास्तविक मनोबल मिलता है, नमाज़ नमाज़ी को स्वच्छ, तथा पवित्र रखती है और स्वास्थ्य प्रदान करती है। परन्तु याद रहे नमाज़ पढ़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है अतः नमाज़ का उद्देश्य अल्लाह का आज्ञापालन कर के अल्लाह को राजी करना है, अतः नमाज़ अल्लाह को राजी करने ही की नीयत से पढ़ी जाए, किसी और नीयत से पढ़ी जाएगी तो नमाज़ स्वीकार न होगी परन्तु नमाज़ के जो अतिरिकत लाभ हैं वह अल्लाह की ओर से पुरस्कार हैं, अतः कोई इस नीयत से नमाज़ पढ़े कि नमाज़ से स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी तो नमाज़ न होगी, नमाज़ से और भी बहुत से लाभ हैं, नमाज़ी प्रति दिन पांच समय में कम से कम ग्यारह बार अपने पापों तथा भूल चूक की अल्लाह से क्षमा मांगता है, परिणाम स्वरूप वह हर प्रकार के पापों तथा अपराधों से दूर रहता है अतः नमाज़ी आतंकी नहीं हो सकता है, उत्पाती नहीं हो सकता, अत्याचारी नहीं हो सकता, व्यभिचारी नहीं हो सकता, दुष्कर्मी नहीं हो सकता, घूसखोर नहीं हो सकता, काम चोर नहीं हो सकता वह हर प्रकार की बुराइयों से दूर रहता है पवित्र कुर्आन में स्वयं बता दिया गया है कि अनुवाद : "नमाज़ काइम करो निःसंदेह

नमाज़ हर प्रकार की बेहयाई (अश्लीलता) तथा हर प्रकार की बुराई से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी चीज़ है''।

(अलअन्कबूतः 45)

नमाज़ी समाज का एक सज्जन पुरुष होता है उसकी जीवनी देख कर समाज के लोग प्रभावित होते हैं, नमाज़ी स्वयं भले आचरणों वाला होता हे और समाज में भले आचरण फैलाता है।

यदि नमाज़ी से यह लाभ प्राप्त न हों तो नमाज़ी के नमाज़ पढ़ने में कोई खोट है, उसको चाहिए कि नमाज़ न छोड़े नमाज़ बराबर पढ़ता रहे परन्तु किसी धर्म गुरू द्वारा अपनी नमाज़ को शुद्ध करने का प्रयास करता रहे।

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान इससे मायूस हो गया है कि अरब महाद्वीप के नमाजी (मुसलमान) उस की बंदगी करेंगे, मगर फसाद डालने में, दिलों को खराब करने में और रंजिश डलवाने में लगा हुआ है।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि किसी मुसलमान के लिए जाइज नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़ियादा बोलना छोड़े और जिस ने ऐसा किया और उसी हालत में मर गया तो वह दोजख में जायेगा। (अबू दाऊद)

हज़रत अबू खिराश हदरद बिन अबू हदरद अस्लमी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि आप फरमाते थे जो शख्स अपने मुसलमान भाई से एक साल तक जुदाई (यानी तअल्लुकात तोड़े रखे गा) तो यह तअल्लुक तोडे रखना उसकी रक्तपात की तरह है।

(अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि किसी मुसलमान को जाइज नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से जाइद बोलना छोड़ दे, अगर तीन दिन इसी हालत में गुजर जायें तो उस को चाहिए कि मुलाकात हो तो फौरन सलाम करे। अगर दूसरे ने जवाब दिया तो सवाब में दोनों शरीक हुए और अगर उसने जवाब न दिया तो वह गुनहगार हुआ और सलाम करने वाला उस तअल्लुक तोड़ने की गुनाह से निकल गया। (अबूदाऊद)

कानाफूसीः-

अनुवादः— बेशक यह कानाफूसी शैतान की ओर से है! (सूरः मुजादलः4)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तीन आदमी एक जगह हों तो दो आदमी एक दूसरे से चुपके चुपके बात न करें। (बुखारी मुस्लिम)

मुमानियत इसलिए है कि तीसरे को रंज होगा वह समझेगा कि मुझे मशवरे के काबिल नहीं समझा या यह ख्याल करेगा कि मेरी बुराई हो रही है।

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

हज और उमरा के बारे में आप सल्ल0 का तरीक़ा

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनुवादः मु0 हसन अंसारी

इसमें किसी का इख़्तेलाफ़ नहीं है कि हिजरत के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सिर्फ़ एक हज फ़रमाया और वही हिज्जतुल वदा था जो सन् दस हिज्री में अदा फ़रमाया गया। हज सन् नौ या दस हिज्री में फ़र्ज़ हुआ इसमें इख़्तेलाफ़ राय है। हिजरत के बाद आपने चार उमरे किये वह सब ज़ीक़ादा के महीने में हुए।

"अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हज का इरादा फ़रमाया और लोगों को इसकी ख़बर दी कि आप हज के लिए जाने वाले हैं। यह सुन कर लोगों ने आप के साथ हज में जाने की तैयारियां शुरु कर दीं।"

इसकी खबर मदीना के आस–पास पहुंची और वहां के लोग बड़ी तादाद में मदीना में हाज़िर हुए। रास्ते में इतनी बड़ी तादाद में लोग क़ाफ़िले में शामिल होते गये, कि उन का शुमार मुशकिल है। लोगों का एक हुजूम था, जो आगे, पीछे, दाहिने, बायें जहां तक निगाह जाती आप को अपने जुलूस में लिए हुए थे। आप मदीना से दिन में जुहर के बाद पचीस ज़ीक़ादा दिन शनिवार को रवाना हुए। पहले जुहर की चार रकअतें आपने अदा फ़रमाई और रवाना हुए, जुल हुलैफा पहुंच कर आपने और सब ने हज का एहराम बाँधा, इससे पहले खुतबा दिया और इसमें एहराम के वाजिबात और सुनन बयान फ़रमाये। फिर तलबिया कहते हुए रवाना हुए। तलबिया के अल्फ़ाज़ यह थेः–

"लब्बैक, अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल हम्द वन्नेमत लक वल्मुल्क ला शसरीका लक"

मजमा इन अल्फ़ाज़ को घटा देता कभी बढ़ा देता। इस पर आप कोई नकीर न फ़रमाते। तलबिया का सिलसिला आप ने बराबर जारी रखा और "अ़रज" में पहुंच कर पड़ाव किया। आप की सवारी और हज़रत अबू बक्र की सवारी एक थी।

फिर आगे चले और "अलअबवा" पहुंचे। वहां से चल कर "वादी–ए–असफ़ान" और "सरिफ़" पहुंचे, फिर रात वहां गुज़ारी यह जिलहिज्जा की चार तारीख़ थी, फज्र की नमाज़ आपने अदा फ़रमाई। उसी रोज़ गुस्ल भी फ़रमाया और मक्का की तरफ रवाना हुए। मक्का में आप का दाख़िला दिन में बालाई (ऊँचाई) मक्का की तरफ़ से हुआ। वहां से चलते हुए आप हरम शरीफ़ में दाख़िल हुए यह चाश्त का वक़्त था। बैतुल्लाह पर नज़र पड़ते ही आपने फ़रमायाः–

"ऐ अल्लाह! अपने इस घर की इ़ज़्ज़त व शरफ़ ताज़ीम व तकरीम और रोब व हैबत में और इज़ाफ़ा फ़रमा।"

दस्ते मुबारक बुलन्द करते तकबीर कहते और फ़रमातेः–

"ऐ अल्लाह आप सलामती हैं, आप ही से सलामती का वजूद है, ऐ हमारे रब हम को सलामती के साथ ज़िन्दा रख।"

जब हरम शरीफ़ में आप दाख़िल हुए तो सब से पहले आपने काबा का रुख़ किया। हज्र असवद का सामना हुआ तो आपने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के उसका बोसा लिया, फिर तवाफ़ के लिए दाहिनी तरफ़ रुख़ किया। काबा आप के बायें तरफ़ था। इस तवाफ़ के पहले तीन शौत (फेरा, गश्त) में आपने रमल किया। आप तेज़ी से क़दम उठाते थे। क़दमों का फ़ासिला मुख़्तसर होता था। आपने अपनी चादर अपने एक शाने पर डाल ली थी, दूसरा शाना खुला हुआ था। जब आप हज्र असवद के सामने गुज़रते तो उसकी तरफ़ इशारा कर के अपनी छड़ी से इस्तेलाम (स्पर्श करना) करते। जब तवाफ़ से फ़राग़त हुई तो मक़ामे इब्राहीम के पीछे तशरीफ़ लाये और यह आयत तिलावत फ़रमाई:—

"वत्तख़ेजू मिम मक़ामे इब्राहीमा मुसल्ला" (सूरः बक़रा—125)

इसके बाद यहां दो रकअतें पढ़ीं। आप नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फिर हज्र असवद के क़रीब तशरीफ़ ले गये। और उसका बोसा लिया, फिर सफ़ा की तरफ़ उस दरवाज़े से चले जो आपके सामने था जब उसके क़रीब आये तो फ़रमाया:—

"सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं, मैं शुरु करता हूं उस से जिस से अल्लाह तआला ने शुरु किया।"

फिर आप सफ़ा तशरीफ़ ले गये यहां तक कि काबा आप को नज़र आने लगा फिर क़िबला की तरफ़ देख कर आपने फ़रमाया:—

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है, उसका कोई शरीक नहीं। उसी का सब मुल्क और बादशाही है। और उसी के लिए सारी हम्द व तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने अपना वादा पूरा किया, अपने बन्दे की मदद फ़रमाई, और तमाम जमाअतों और गिरोहों को तन्हा शिकस्त दी फिर सफा व मरवा के दर्मियान सात चक्कर लगा कर सई पूरी की और हलाल नहीं हुए।"

मक्का में आपने चार दिन इतवार, सोमवार, मंगल और बुद्ध को क़याम फ़रमाया। जुमेरात को दिन निकलते ही आप तमाम मुसलमानों के साथ "मिना" तशरीफ़ ले आये। जुहर और अस्र की नमाज़ें यहीं अदा फ़रमाई, और रात भी यहीं बसर की। यह जुमा की रात थी, जब सूरज निकल आया तो आप "अरफ़ात" की तरफ़ रवाना हुए। आपने देखा कि "नमिरा" में आप के लिए ख़ेमा लगाया जा चुका है, इसलिए आप इसी में उतरे। जब ज़वाल का वक़्त हो गया तो अपनी ऊँटनी "कसवा" को तैयार करने का हुक्म दिया, फिर वहां से रवाना हो कर "अरफ़ात" के मैदान के बीच में आप ने मंज़िल की और अपनी सवारी ही पर तशरीफ़ रखते हुए एक शानदार खुतबा दिया जिसमें आपने इस्लाम की बुनियादों को वाज़ेह किया, और शिर्क व जिहालत की बुनियादें ढा दीं। इसमें आपने उन तमाम चीज़ों की तहरीम (हराम करना) फ़रमाई जिन के हराम होने पर तमाम मज़ाहिब व अक़वाम मुत्तफिक़ हैं।

और वह हैं:– नाहक, ख़ून करना, माल हड़प करना, आबरू रेज़ी, आपने जाहिलियत की तमाम बातों को अपने क़दमों के नीचे पामाल कर दिया, जाहिलियत का सूद कुल का कुल आपने ख़त्म कर दिया और उसको बिल्कुल बातिल करार दिया। औरतों के साथ अच्छा सुलूक करने की तलक़ीन की और बताया कि दस्तूर के मुताबिक इख़्लाक़ और अच्छे बर्ताव के मेयार पर ख़ुराक और लिबास, नान नफ़क़ा उनका हक़ है।

उम्मत को आपने अल्लह की किताब के साथ जुड़े रहने की वसीयत की और फरमाया, "जब वह इसके साथ अपने को अच्छी तरह वाबस्ता रखेंगे, गुमराह न होंगे।" आपने उनको आगाह किया कि उनसे कल क़यामत के दिन आपके बारे में सवाल होगा, और उनको इसका जवाब देना होगा इस मौक़े पर आपने तमाम हाज़रीन से पूछा कि वह इस मौक़े पर क्या कहेंगे, और क्या गवाही देंगे? सब ने एक ज़बान हो कर कहा कि हम गवाही देंगे कि आपने हक़ का पैग़ाम बे कमोकास्त (बिना घटाये) पहुंचा दिया आपने अपना फ़र्ज़ पूरा किया, ख़ैरख़्वाही का हक़ अदा कर दिया। यह सुन कर आपने आसमान की तरफ़ उंगली उठाई और तीन बार अल्लाह तआला को उन पर गवाह बनाया, और उनको हुक्म दिया जो यहां मौजूद हैं व उन लोगों तक यह बातें पहुंचा दे जो यहां नहीं।

जब आप इस ख़िताब से फ़ारिग़ हुए तो आपने हज़रत बिलाल रज़ि0 को अज़ान का हुक्म दिया। उन्होंने अज़ान दी, फिर आपने जुह्र और अस्र की नमाज़ें जमा कर के दो दो रकअ़त कस्र से पढ़ीं। यह जुमा का दिन था।

नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर आप अपनी सवारी पर तशरीफ़ ले गये और मौक़फ़ (वकूफ की जगह) पर आये, यहां आ कर आप अपनी सवारी पर बैठ गये और गुरूब आफ़ताब तक दुआ व मुनाजात में मशगूल रहे। दुआ में आप दस्ते मुबारक सीना तक उठाते थे जैसे कोई सायल और मिस्कीन नाने शबीना (बासी रोटी) का सवाल कर रहा हो। दुआ यह थी:–

"ऐ अल्लाह! तू मेरी सुनता है, और मेरी जगह को देखता है, और मेरे पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है, तुझ से मेरी कोई बात छिपी नहीं रह सकती, मैं मुसीबतज़दा हूं, मुहताज हूं, फ़रियादी हूं, पनाह जू हूं, परेशान हूं, हिरासां हूं, अपने गुनाहों का इक़रार करने वाला हूं, एतराफ करने वाला हूं, तेरे आगे गिड़गिड़ाता हूं, जैसे गुनाहगार ज़लील व ख़्वार गिड़गिड़ता है, और तुम से तलब करता हूं जैसे ख़ौफ़ज़दा, आफ़त रसीदा तलब करता हो, और जैसे वह शख़्स तलब करता है जिस की गर्दन तेरे सामने झुकी हो और उसके आंसू बह रहे हों, और तन बदन से वह तेरे आगे फ़रोतनी (आज़िज़ी "सहिष्णुता") किये हुए हो और अपनी नाक तेरे सामने रगड़ रहा हो। ऐ रब! तू मुझे अपने से दुआ मांगने में नाकाम न रख। और मेरे हक़ में बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला हो जा, ऐ सब मांगे जाने

वालों से बेहतर और सब देने वालों से अच्छे।"

इसी मौके पर यह आयत नाज़िल हुई:–

"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया, तुम पर अपनी नेअ़मतें तमाम कर दी। और तुम्हारे लिए इस्लाम को बहैसियत दीन इन्तेख़ाब कर दिया।"

(सूरः मायदा–3)

जब आफ़ताब गुरूब हो गया तो आप अरफ़ात से रवाना हो गये, और उसामा बिन ज़ैद को अपने पीछे बिठाया आप सुकून और वकार के साथ आगे चले, ऊँटनी की मेहार आप ने इस तरह समेट ली थी कि क़रीब था कि उसका सर आप के कज़ाबा (ऊँटनी की काठी) से लग जाये। आप कहते जाते थे कि लोगो सुकून व इतमिनान के साथ चलो। रास्ते भर आप तलबिया करते जाते और जब तक मुज्दल्फ़ा न पहुंच गये यह सिलसिला जारी रहा। वहां पहुंचते ही आपने हज़रत बिलाल रज़ि0 को अज़ान का हुक्म फ़रमाया। अज़ान दी गई, आप खड़े हो गये और ऊँटों का बिठाने और सामान उतारने से पहले मग़रिब की नमाज़ अदा फ़रमाई। जब लोगों ने सामान उतार लिया, तो आप ने इशा की नमाज़ भी अदा फ़रमाई। फिर आप आराम फ़रमाने के लिए लेट गये और फज्र तक सोये।

फ़ज्र की नमाज़ अव्वल वक़्त अदा फ़रमाई फिर सवारी पर बैठे और "मशअरूल हराम" आये और क़िबला रुख हो कर दुआ, तकबीर और ज़िक्र में मशगूल हो गये यहां तक कि खूब रोशनी फैल गई। यह सूरज निकलने से पहले की बात है। फिर आप मुज्दल्फ़ा से रवाना हुए। फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ि0 सवारी पर आप के पीछे थे। आप बराबर तलबिया में मशगूल रहे। आप ने इब्न अब्बास को हुक्म दिया कि रमी जिमार के लिए सात कंकरियां चुन लें। जब आप वादी–ए– मुहस्सर के बीच में पहुंचे तो आपने ऊँटनी को तेज़ कर दिया और बहुत उजलत फ़रमाई। क्योंकि यही वह जगह है जहां असहाबे फ़ील पर अज़ाब नाज़िल हुआ था, यहां तक कि मिना पहुंचे और वहां से "जमरतुलअक्बा" तशरीफ़ लाये और सवारी पर सूरज निकलने के बाद रमी की और तलबिया मौकूफ़ किया।

फिर मिना वापसी हुई। यहां पहुंच कर आपने एक बलीग़ खुतबा दिया जिस में आप ने "यौमुन्नहर" (कुर्बानी का दिन) की हुरमत से आगाह किया और अल्लाह तआला के नज़दीक इस दिन की जो फ़जीलत है उस का ज़िक्र किया, और जो किताब अल्लाह की रोशनी में उनकी क़यादत करे, उसकी इताअत व फ़रमांबरदारी वाजिब क़रार दिया, फिर आप ने हाज़रीन से कहा कि वह अपने मनासिक़ व आमाले हज आप से मालूम कर लें। आपने लोगों को यह भी तलक़ीन फ़रमाई कि देखो मेरे बाद काफ़िरों की तरह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारते रहो। आपने यह

भी हुक्म दिया कि यह सब बातें दूसरों तक पहुंचा दें। इस खुतबे में आपने यह भी इरशाद फ़रमायाः—

"अपने रब की इबादत करो, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ो एक महीने (रमज़ान) के रोज़े रखो, और अपने उलिलअम्र की इताअत करो अपने रब की जन्नत में दाखिल हो जाओगे।"

उस वक़्त आपने लोगों के सामने अलविदयाइया कलेमात भी कहे और इसी वजह से इस हज का नाम "हिज्जतुल वदा" पड़ा।

फिर मिना में "मनहर" तशरीफ़ ले गये और अपने हाथ से तिरसठ ऊँट ज़बह किये, उस वक़्त आप की उम्र का तिरसठवां साल था। तिरसठ के बाद आप ठहर गये और हज़रत अली रज़ि0 से कहा कि सौ में जितने बाक़ी हैं वह पूरे करें। आपने जब कुर्बानी पूरी कर ली तो हज्जाम को तलब फ़रमाया और बालों को मुंडाया। और अपने बालों को क़रीब के लोगों में तक़सीम फ़रमाया, फिर सवारी पर मक्का रवाना हुए, तवाफ़े इफ़ाज़ा किया जिसको तवाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं। फिर ज़मज़म कुएं के पास तशरीफ़ लाये, और खड़े हो कर पानी नोश फ़रमाया। फिर उसी दिन मिना वापसी हुई और रात वहीं गुज़ारी। दूसरे दिन आप दिन ढलने का इन्तेज़ार करते रहे। जब दिन ढल गया तो आप अपनी सवारी से उतर कर रमी ज़ेमार के लिए तशरीफ़ ले गये। पहले जमरा से शुरु किया। उसके बाद बीच वाले जमरा और तब पीछे वाले जमरा के क़रीब जा कर रमी की। मिना में आपने दो खुतबे दिये एक कुर्बानी के दिन, जिस का ज़िक्र अभी ऊपर गुज़रा, दूसरा कुर्बानी के दूसरे दिन।

यहां आप ने तवक्कुफ़ फ़रमाया और अय्याम तशरीफ़ के तीनों दिन की रमी मुकम्मल की, फिर मक्का की तरफ़ रुख़ किया और सहर के वक़्त तवाफ़े विदा किया और लोगों को तैयारी का हुक्म फ़रमाया और मदीना की तरफ़ रवाना हुए।

जब आप ग़दीर ख़ुम पहुंचे तो आपने एक ख़ुतबा दिया और हज़रत अली रज़ि0 की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई। आपने फरमायाः—

"जिसको मैं महबूब हूं अली भी उसको महबूब होना चाहिए, ऐ अल्लाह जो अली से मुहब्बत रखे तू भी उससे मुहब्बत रख और जो उन से अदावत रखे उससे तू भी अदावत रख।"

जब आप "जुल हुलैफ़ा" आये तो रात यहीं बसर की। सवादे मदीना पर आप की नज़र पड़ी तो आप ने तीन बार तकबीर कही और इरशाद फ़रमायाः—

"ख़ुदा बुज़ुर्ग व बरतर है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, बस उसी की सल्तनत है। उसी के लिए तारीफ़ है वह हर बात पर क़ादिर है, लौटे आ रहे हैं तौबा करते हुए, फ़रमांबरदाराना ज़मीन पर पेशानी रख कर अपने रब की तारीफ़ में मशगूल हो कर, ख़ुदा ने अपना वादा सच्च किया, अपने बन्दे की नुसरत की और तमाम क़बायल को तनहा शिकस्त दी।"

आप मदीना में दिन के वक्त दाख़िल हुए।

❖❖❖

ऐलान

पाठकों की सेवा में

भारी मँहगाई ने होश उड़ा दिये हैं पहले के मुकाबले में कागज़ कहीं मँहगा मिल रहा है, छपाई भी बढ़ गई है इसलिए अफसोस के साथ ऐलान करना पड़ रहा है कि जुलाई 2017 के अंक से "सच्चा राही" का वार्षिक सहयोग ₹ 300/- और पर कापी का मूल्य ₹ 25/- कर दिया गया है। हमें आशा है कि हमारे पाठक इस वृद्धि (इज़ाफ़े) को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करेंगे।

धन्यवाद
(प्रबन्धक)

कुर्आन की शिक्षा..... *दोनों पक्षों के समझदार लोग सुलह कराने की कोशिश करें।*

7. आमतौर पर जो बड़प्पन का एहसास रखता है वह दूसरों के साथ सही व्यवहार नहीं कर पाता।

8. यह आयत विशेष रूप से यहूदियों के बारे में उतरी जो खुद भी कंजूसी करते और उसकी अच्छाईयां बयान करते हैं और तौरेत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उल्लेख को छिपाते हैं तो जो भी ऐसी गंदी हरकतें करेगा उसके लिए अपमान जनक अज़ाब है।

9. जो ख़र्च थोड़ा बहुत करते हैं वह भी दिखावे के लिए अगर व ईमान की हालत में और अल्लाह के लिए खर्च करते तो अपने किये पर पूरा बदला पाते।

10. हर उम्मत (समुदाय) के पैग़म्बर और अच्छे लोग अपनी अपनी उम्मतों का हाल बयान करने के लिए जाएंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत का हाल बताएंगे और इस का यह भी मतलब हो सकता है कि उन गवाहों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गवाह होंगे, कुछ हदीसों में आता है कि उम्मतें कह देंगी कि हमारे पास कोई नबी (पैगम्बर) आया ही नहीं तो मुस्लिम गवाही देंगे कि हर क़ौम में पैगम्बर आए हैं उनसे पूछा जाएगा कि तुम कैसे गवाही देते हो, वे कहेंगे कि हमारे पैग़म्बर ने हमें बताया।

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

एकत्व तथा सार्थकता-मिल्लत की अनिवार्य आवश्यकताएं

–हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
–हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

नोट:-मिल्लत अथवा उम्मत का अर्थ है, मुस्लिम समुदाय, मुस्लिम क़ौम अथवा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी।

इस समय मिल्लते इस्लामिया के नाम से जगह जगह प्रयास हो रहे हैं परिश्रम तथा आंदोलन भी हो रहे हैं आहुतियां भी प्रस्तुत की जा रही हैं। और इस सिलसिले में नव युवकों से बड़ी शक्ति मिल रही है अपितु अधिकतर मिल्ली तथा क़ौमी आन्दोलनों में अन नव युवक आगे आगे हैं तथा आहुतियां प्रस्तुत कर रहे हैं तथा विरोधी शक्ति से लोहा मनवा रहे हैं नव युवक तत्व हर मिल्लत तथा क़ौम (समुदाय) के लिए बड़ी शक्ति और बड़ा सहारा होता है तथा उसके उल्लास और उसकी भावनाओं से उद्देश्य प्रप्ति में बड़ा सहयोग मिलता है यह वास्तविकता जिस प्रकार भूतकाल में जानी गई थी उससे कहीं अधिक वर्तमान युग में जानी जा रही है इसी लिए हर स्थान पर इस शक्ति को अपनाने तथा उससे काम लेने की चेष्टा की जाती है नव युवकों को आकृष्ट करने, उनको निकट लाने तथा उन को गतिशील बनाने की विधियां अपनाई जाती हैं तथा उन से लाभ प्राप्त किया जाता है परन्तु इस में अवलोकन की आवश्यकता है कि नव युवकों की भावनाओं को गतिशील करने वाले कहां तक उद्देश्य युक्त तथा सार्थक हैं। नव युवकों से कम्यूनिष्ट संगठन भी काम लेते हैं, क्रन्ति प्रिय शकितयां भी सहयोग लेती हैं, नव युवकों से विद्रोही तत्व भी सहयोग लेने का प्रयास करते हैं तथा नव युवकों से भलाई तथा उच्चतर उद्देश्य रखने वाले भी काम लेते हैं तथा हर एक नवयुवकों से कुछ न कुछ लाभ प्राप्त कर लेता है। इस श्रृंखला में प्रसन्न कर देने वाले उदाहरण भी हैं। वास्तव में नव युवा एक शक्ति एक धारा है, शुद्ध दिशा पर लगे तो मार्ग में रुकावट डालने वाली चट्टानों को टुकड़े–टुकड़े कर दे और हर प्रकार की रुकावटों को अपनी धारा में बहा ले जाए परन्तु यदि अशुद्ध दिशा में लगे तो शत्रुओं को रोकने वाली नगर प्राचीरों को स्वयं तोड़ कर शत्रुओं को नगर में घुसने का मार्ग दे दे और अपनी उच्च मान्यताओं को स्वयं ही मिटा डाले।

नव युवकों की इस शकित तथा योग्यता के सम्मान की आवश्यकता है और उन की शक्ति से काम लेने में कौमी तथा मिल्ली हितों को ध्यान में रखने तथा रचनात्मक भावनाओं से काम लेने की आवश्यकता है, यह काम मिल्लत (समुदाय) के नेतृत्व का है कि वह चिन्तन कर के निर्णय ले कि उस को नवयुवकों को किस ओर ले जाना है और उन की शक्ति से क्या काम लेना है।

उम्मते इस्लामिया (मुस्लिम समुदाय) शताब्दियों से पिछड़ेपन, बिखराओं तथा असम्मानित जीवन बिताते बिताते साहस हीन हो चुकी

है इसमें गंभीरता तथा कार्य शक्ति में कमी हो गई है अपने भव्य इतिहास के अध्ययन से उस के सामने आकांक्षाओं तथा आशाओं के उद्यान लग जाते हैं परन्तु यह उद्यान भूतकाल के हैं वर्तमान परिस्थिति में हम को स्वयं उद्यान लगाना है भूतकाल के बीते शान्दार हालात पर सहारा लगा कर बैठे रहना रेत के मैदान को पानी समझ बैठना है और उस से पानी पा लेने की आशा करना है, दूसरी कौमों की भांति हमारी मुस्लिम कौम को भी नव युवकों की शक्ति की आवश्यकता है परन्तु यह काम मिल्ली नेतृत्व का है कि वह मिल्लत के नव युवकों की शक्ति को शुद्ध दिशा पर लगाए तथा उन के अशुद्ध दिशा पर लगने से उस की हानियों से मिल्लत को अवगत करे।

परन्तु बड़े खेद की बात है कि मिल्लत का वर्तमान नेतृत्व अनगिनत भागों तथा गुटों में बंटा हुआ है। सामान्यता मिल्लते इस्लामिया अपना मापदण्ड तथा उद्देश्य नियुक्त नहीं कर सकी है, कुछ गुट तो परस्पर हाथा पाई में लगे हुए हैं तो कुछ उद्देश्य रहित प्रयासों में व्यस्त हैं तथा कुछ भावनाओं में मग्न हैं और जो भावना प्रिय तत्व उन को हाथ आ गए हैं उन की शक्ति को वह व्यर्थ प्रयासों में नष्ट कर रहे हैं।

मुसलमानों के नेतृत्व इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं कि उन के नेतृत्व में समय की वास्तविक आवश्यकता को समझा और स्वार्थ रहित हो कर उस पर परिश्रम किया परिणाम स्वरूप कल्पना रहित सफल परिणाम प्राप्त किए, सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अनेक मुस्लिम राज्यों में से एक सीमित मुस्लिम राज्य के शासक थे परन्तु उन्होंने अपने नेतृत्व को स्वार्थ रहित हो कर शुद्ध दिशा पर लगाया तो समय का सब से बड़ा कार्य कर दिखाया और वह था बैतुल मक्दिस की विजय का कार्य, जिस को आज तक स्वर्ण स्वर्णीय अक्षरों मे लिखा जाता है और कियामत तक लिखा जाता रहेगा।

परन्तु हमारे इस वर्तमान काल की बड़ी विपत मिल्लते इस्लामिया का बिखराव और अर्थ रहित तथा उद्देश्य रहित होना है दूसरी विपत (फित्ना) हर व्यक्ति की नेता बनने की कामना है हमारी मिल्लते इस्लामिया में नेता बनने की कामना एक रोग धारण कर चुकी है, इस कामना ने नेतृत्व को एक व्यवसाय का रूप दे दिया है। नेतृत्व के यह इच्छुक चाहे नेतृत्व के साधारण गुण भी न रखते हों परन्तु नेतृत्व के कार्य को पूरे उल्लास तथा उत्साह से अपनाते हैं, इस कारण उम्मत (मुस्लिम समुदाय) नेतृत्ववाद में उलझ कर रह गई है और इस नेतृत्व इच्छा के क्षेत्र में हमारे वह नव युवक भी अपनी कामना शक्ति के अनुकूल इस में भाग लेते हैं जो जीवन स्थल में नये नये प्रवेश पाए हुए होते हैं तथा उनके पास अनुभव के समक्ष उत्तेजना की पूंजी अधिक होती है जिस का परिणाम यह होता है कि जो समस्या बुद्धि से हल हो सकती है उस समस्या का समाधान उत्तेजना से करने का प्रयास किया जाता है यह बात आशंका की सूचक है।

शेष पृष्ठ.....26 पर

मुसलमानों को मुसलमान बनाने की ज़रूरत

—मौलाना शम्सुल हक़ नदवी

एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा–ए–किराम रज़ि0 के दर्मियान तशरीफ फरमा थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अभी एक शख़्स आएमा वह जन्नती है", कुछ देर के बाद एक सहाबी रज़ि0 आए, वज़ू किया, नमाज़ पढ़ी और चले गए, दूसरे दिन फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही फरमाया कि "अभी एक शख़्स आएगा वह जन्नती है" वही सहाबी रज़ि0 दूसरे दिन भी आए, नमाज़ पढ़ी और चले गए, तीसरे दिन फिर यही बात पेश आई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "एक शख्स अभी आएगा, वह जन्नती है" वही सहाबी फिर आए, नमाज़ पढ़ कर जाने लगे तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आस रज़ि0 मस्जिद से निकले और उनके साथ हो लिए, तीन दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नती होने की बशारत (खुशखबरी) दी और उनके अलावा कोई नहीं आया, देखना चाहा कि यह क्या अमल करते हैं? जिस की वजह से उनको जन्नती होने की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुशखबरी दी है, उन से कहा कि वालिद साहब से हमारी कुछ बात हो गई है, तीन दिन हम आप के यहां रहना चाहते हैं, उन्होंने खुशी के साथ मेहमान बना लिया, अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आस रज़ि0 देखते रहे कि यह कितनी इबादत व रियाजत करते हैं, उनके मामूलात (रात दिन के काम) क्या हैं? जिन की वजह से उनको जन्नत की खुशखबरी मिल रही है, उन्होंने देखा कि फराइज़ व वाजिबात और बीवी बच्चों के हुकूक़ अदा करने के सिवा ज़ियादा इबादत व रियाजत का कोई मामूल नहीं, तीन दिन गुज़र गए तो उन से कहा कि वालिद से हमारी कुछ बात नहीं हुई थी, आप के बारे में तीन दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नती होने की खुशखबरी दी, इसलिए हम ने देखना चाहा कि आप के क्या मामूलात हैं जिन की वजह से जन्नत की बशारत मिल रही है? हम ने आप के कुछ ज़ियादा मामूलात तो नहीं देखे, आप क्या अमल करते हैं? जिस की वजह से यह बशारत आप को मिल रही है? उन्होंने जवाब दिया आपने जो कुछ देखा यही है कोई और अमल नहीं, जब अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आस रज़ि0 उनके पास से निकले तो उन्होंने वापस बुलाया और फरमाया "हमारे मामूलात वही हैं जो आपने देखे, हम अपने काम से काम रखते हैं, किसी मुसलमान के लिए दिल में बुग्ज़ व कीना नहीं रखते और न किसी की खुशहाली पर हसद करते हैं, अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्ने आस रज़ि0 ने फरमाया "बस यही काम मुश्किल है।"

तिर्मिज़ी शरीफ की रिवायत है, हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ि0 फरमाते हैं कि मुझ से अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "बेटे! अगर तुम यह कर सको कि तुम्हारे रात दिन इस तरह गुज़रें कि तुम्हारे दिल में किसी के लिए खोट और बुग्ज़ न हो तो ऐसा करो, बेटे! यह हमारा तरीक़ा है, जिस ने हमारे तरीक़े को ज़िन्दा किया उसने हम से महब्बत की और जो हम से महब्बत करेगा, उसको जन्नत में हमारा साथ नसीब होगा"।

बज़ाहिर (देखने में) तो लफ्ज़ "ग़िश" खोट व कीना एक लफ्ज़ है लेकिन ग़ौर से काम लिया जाए तो इसमें सारे ही हुक़ूक़ुल इबाद (बनदों के हुक़ूक) हर तरह के आ जाते हैं, दोस्तों व रिश्तों से ले कर लेन देन सभीकुछ इस में आ जाता है, इसी की कमी से इस वक़्त हमारा पूरा समाज फसाद व बिगाड़ का शिकार है।

इबादत व रियाज़त करना, नवाफिल व तहज्जुद का एहतिमाम करना, ज़िक्र व तिलावत में मशगूल रहना आसान है, लेकिन पूरी ज़िन्दगी में शरीअ़त के अहकाम की पाबन्दी और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों की पैरवी करना मुश्किल है जब कि अस्लन यह बातें मक्सूद हैं जिन में अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिज़ा व खुशनूदी का राज़ छिपा हुआ है और समाज के चैन व सुकून का सारा इनहिसार (दारोमदार) इसी पर है।

इसीलिए कुछ अल्लाह वाले और उलमा–ए–रब्बानिय्यीन यह फरमाते हैं कि बहुत ज़ियादा ज़िक्र करने व विर्द और नफ्लों का एहतिमाम करने से कभी कभी अपनी बुज़ुर्गी का गुरूर पैदा हो जाता है, लेकिन फर्ज़ों को अदा करने और सुन्नत की पैरवी करने में यह बात पैदा नहीं होती, हज़रत उमर रज़ि0 के खिलाफत के ज़माने में एक दिन एक सहाबी फज्र की जमाअ़त में हाजिर नहीं हुए, उनके घर गए, बीवी से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि पूरी रात नफ्लों व तहज्जुद में मशगूल रहे, सुबह आंख लग गई इसलिए मस्जिद में नहीं जा सके, हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया "रात में इतना न जागो कि जमाअत छूट जाए, जमाअत में हाजरी ज़रूरी है।

यही वजह है कि बहुत से हज़रात औराद व अज़कार के बड़े पाबन्द लेकिन फर्जों को अदा करने और हलाल व हराम का कोई फर्क़ नहीं, बीवी व बच्चों और दोस्त व अहबाब के हुक़ूक को पूरा करने में कोताही करते हैं, सिला रहमी जैसा अहम फरीज़ा पूरा करने का जरा ध्यान नहीं, अज़ीज़ों से क़ता तअल्लुक (बोल चाल बन्द), पड़ोसियों से लड़ाई, मिज़ाज में गुस्सा व तेज़ी, हिल्म व बर्दाश्त की कमी, एक दूसरे की तरफ से बदगुमानी, यह वह हुक़ूक व अहकाम हैं जिस का छोड़ना सरासर अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफरमानी है, रिज़्क़ में हराम व हलाल का यह हाल है कि दूसरों की देखा देखी आमदनी काफी नहीं का बहाना ले कर सूदी कर्ज़ लिये जाते हैं, धोखा किया जाता है, हालांकि हलाल व कम आमदनी पर सब्र करने

से माल की प्यास बुझती है और लालच व हिर्स की जिल्लत से हिफाज़त रहती है और सब्र न करने से माल की प्यास बढ़ती ही जाती है, और हीला (बहाने बनाने) के दरवाज़े खुल जाते हैं, जुब्बा व दस्तार लोगों को फरेब देने का जाल बन जाता है, हमारे कारोबार, अख़लाक़ व किरदार, आपसी मामलात दोस्तों व रिश्तेदारों के हुकूक को पूरा करने का जो आम हाल है, यह अल्लाह को हद दर्जे नाराज करने वाला है।

इस वक़्त आलमी पैमाने पर मुसलमानों को तबाही व बर्बादी के जो हालात पेश आ रहे हैं, उन का कारण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्मों को तोड़ने और नक़द फायदे की धुन में आखिरत से ग़फलत का है जिस ने उन को मग़रबी क़ौमों के दर का भिखारी बना कर रख दिया है, लेकिन अफसोस यह है कि इस सब के बावजूद हालात को सही करने की ज़रा फिक्र नहीं, बल्कि हर दिन बजाए दीन को सही करने, दीन में बिगाड़ पैदा करने वाले ही काम किये जाऐं तो फिर दूसरे का क्या शिकवह और क्या मुंह है किसी दूसरे से सलाह की उम्मीद का, अल्लाह तआला की रहमत उम्मत की इस्लाह की तरफ सिर्फ अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तुफैल से मुतवज्जेह हो जाए तो अच्छा है, वरना बर्बादी व हलाकत तो हम अपने आप ही खरीद रहे हैं।

अफसोस है गुलशन को ख़ज़ां लूट रही है
शाख़े गुले तर, सूख कर अब टूट रही है

अरब देशों में इस्लाम दुश्मनी, मुसलमानों का मज़ाक़, ग़लत और बुरी बातों का फैलना, दीन और दीनियात के मिटाने की हर तरह की कोशिश कब से जारी है, इसके बाद जो कुछ हो रहा है, क्या इसके बारे में इसके सिवा कुछ कहा जा सकता है:—

और जो मुसीबत तुम पर जाहिर होती है तो तुम्हारे अपने कारनामों से और वह बहुत से गुनाह माफ कर देता है।

हम मुसलमानों की सालों साल से चली आ रही साज़िशों का रोना रोते हैं लेकिन अपने अन्दरूनी बिगाड़ पर गौर नहीं करत कि हमारा क्या हाल हो रहा है? हमारी बड़ी तादाद दूसरों की नक़्क़ाली में उन सारी हदों को पार कर के सिर्फ मुसलमान क़ौम बन कर रह गई, जिन की वजह से हम इस हद तक गिर गये हैं जिसकी इस्लाह की यह खुद ज़िम्मेदार थी, उस में खुद गले तक डूब गये हैं, महब्बत से खाली, इन्सानियत से दूर, बेहयाई, बुरे कामों की सारी हदें पार कर जाने . वाली क़ौमों की ज़ाहिरी चमक दमक के धोखे में आ कर उनकी नक़्क़ाली का ऐसा शौक़ ग़ालिब आ गया है कि हम अपनी सारी क़द्रें भूल चुके हैं, यही नहीं बल्कि बहुत से पढ़े लिखे और मग़रिब ज़दा (पश्चिमी सभ्यता को मानने वाले) मुसलमान, दीन को तरक़्क़ी के रास्ते में रुकावट क़रार देते हैं।

शेष पृष्ठ...26 पर

देश को अब नैतिक और सांस्कृतिक क्रांति की ज़रूरत

—शबाना अली

हम जिस मुल्क में रह रहे हैं, वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश कहा जाता है। इस लोकतंत्र को पाने के लिए हमारे पूर्वजों ने संघर्ष किया और शहीद हुए तब हमें यह आज़ादी मिली। ज़ाहिर है हमने आज़ादी पाने के लिए योगदान किया। हमें यह आज़ादी बिना किसी मेहनत, कुर्बानी के विरासत में या कहें कि मुफ़्त में मिल गयी। जो चीज़ मुफ़्त में या आसानी से बिना मेहनत किये मिल जाती है उसकी लोग क़द्र नहीं करते। हम उसका दुरुपयोग करने लगते हैं। आज देश में जिस तरह के हालात हैं, ऊपर से लेकर नीचे तक जो कुछ हो रहा है, क्या वही आज़ादी है?

हर आदमी लोकतंत्र की अपने ढंग से व्याख्या कर मनमानी कर रहा है संविधान का सम्मान नहीं हो रहा और अपने स्वार्थों के लिए संसद को अखाड़ा बना देते हैं। आज के हालात को देखते हुए कहा जा सकता है कि लोकतंत्र के नाम पर हमें सिर्फ़ दो चीज़ें ही हासिल हैं। पहली, हमें वोट देने का अधिकार है जिसके तहत हम अपनी पसंद का नेता चुन सकें। यानी हमें अपनी सरकार चुनने का अधिकार है। दूसरा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हम अपनी बात नहीं कह रहे, बल्कि दूसरों को गालियां दे रहे हैं। दूसरों को अपमानित कर रहे हैं। विद्वेष फैला रहे हैं। सामाजिक समरसता की जगह समाज में कटुता और विष वमन कर रहे हैं।

सरकार चुनने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अलावा हमारे पास आज़ादी के नाम पर क्या है। ख़बरें पढ़ने को मिल रही हैं गुंडों ने सरेआम सिपाही को गोली मार दी। बदमाश पुलिस से भिड़े। व्यापारी को गोली मारी। पिता को मौत के घाट उतारा। मां को मार डाला। भाई की हत्या कर दी। लोगों को क़ानून और न्याय व्यवस्था का डर ही नहीं है। सरेआम गोलियां चलाना या हत्या कर देना मानों कुछ लोगों का अधिकार बन गया है। क़ानून व्यवस्था को अपने हाथ में लेना जैसे लोगों का शौक़ बन गया है। गुंडे अपनी समानांतर सरकार चलाते सुने गये हैं। जज़ों पर जूता फेंका जाता है। दबंग लोग, सरकारी, ग़ैर-सरकारी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं उनकी तरफ़ आंख उठाने वाला कोई नहीं होता। जो आंख उठाता है वह खुद ही उठ जाता है।

देश में भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। बिना भ्रंष्टाचार के अब कोई काम नहीं करा सकते। जब राजनीति ही भ्रष्टाचार के दलदल में धंसी है तो मशीनरी का भ्रष्ट होना स्वाभाविक है। जो नेता सरकार उत्सवों या सामाजिक समारोहों में हमें नैतिकता और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते हैं वही मंच से उतर कर उसी काम को करने लगते हैं तब जनता उनके उपदेशों को क्यों मानेगी। नेताओं का यह हाल है कि उनका कोई सिद्धांत

नहीं, उनकी कोई विचारधारा नहीं, जहां सत्ता सुख या लालच देखी उसी पार्टी में घुस गये। कल तक जो जिसको गरियाते थे आज उन्हीं के चरणों में पड़े हुए हैं। सरकार चुनने के नाम पर हम सही सरकार भी नहीं चुन सकते। हम तो भ्रष्टों में से कम भ्रष्ट चुनते हैं और कई बार तो वह भी नहीं। कई बार लालच में तो कई बार अपना स्वार्थ देखते हैं और देशहित को पीछे छोड़ देते हैं।

गुलाम और आज़ाद देश में सिर्फ यही फर्क़ है कि हम स्वतंत्रता के नाम पर किसी को भी गाली दे दें, किसी पर भी आरोप लगा दें। किसी भी समाज को अपमानित कर दें। क्या यही लोकतंत्र के मायने हैं। बलात्कार, लूट, डकैती, हत्या, रंगदारी, हफ़्ता वसूली करने जैसे जुर्म में कई बार जेल जाते हैं और वहां से आने के बाद फिर अपने काम पर लौट आते हैं। ऐसे अपराधियों के लिए ही यह लोकतंत्र हैं आज मेरा धर्म, मेरी जाति, मेरा संप्रदाय, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरा परिवार और ज़ियादा हुआ तो स्वार्थ के नाम पर मेरा प्रांत तक मामला सिमट कर रह गया है। कोई भी देश की बात नहीं करता। हां, देश का नाम लेकर राजनीति ज़रूर करते हैं जिससे नाम और दाम क़माते हैं। देश और देश का नाम सिर्फ़ राजनीति करने और सत्ता हासलि करने के लिए किया जाता है। सब लोग ख़ेमों में बंटे हुए हैं। कुछ लोग देश का नाम ले कर नफ़रत, वैमनस्यता, सांप्रदायिकता और विद्वेष फैलाते हैं।

स्वतंत्रता के नाम पर दस लोग इकट्ठा हो जाते हैं और किसी भी नाम की सेना बनाकर किसी पर भी हमला कर देते हैं। ये कथित सेना के लोग खुद जज बन जाते हैं और तुरंत दंड देने लगते हैं। अगर यही लोकतंत्र है तो जंगल राज क्यां है? क्या इसी लोकतंत्र पर हम गर्व करें जहां के लोगों में नैतिकता, हया, शर्म, छोटे–बड़े का सम्मान ख़त्म हो गया है। हर दबंग जज बन गया है, वह समानांतर शासन चला रहा है। क्या ऐसे ही लोकतंत्र के लिए लाखों लोगों ने कुर्बानी दी थी। कई बार लगता है कि उनकी शहादत हमने व्यर्थ कर दी है। जिस देश के लोगों के दिलों में लोकतंत्र का कोई मतलब नहीं। ऐसी हालत में नैतिक क्रांति की ज़रूरत है जो देश में अमन क़ायम कर सके। देश को गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, अशफ़ाक़उल्लाह खां, भगत सिंह, राजगुरु जैसे शूरवीरों ने देश को विदेशियों से आज़ाद करा दिया, अब कबीर, तुलसी, रहीम, बिहारी, सूरदास और दूसरे बड़े दार्शनिकों, लेखकों की ज़रूरत है जो देश के लोगों को नैतिकता, भाई चारा, आपसी सद्भाव के लिए संघर्ष करें। लोगों में ईश्वर के प्रति खौफ़ पैदा करें ताकि आदमी बुरा और अनैतिक काम करते हुए डरे।

(मासिक कान्ति अप्रैल 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः शश ईद के रोज़े किन रोज़ों को कहते हैं?

उत्तरः शश फारसी लफ़्ज़ है जिसके माना छे के हैं, ईद से मुराद ईद का महीना यानि शव्वाल का महीना, शश ईद के रोज़ों का मतलब है शव्वाल महीने के छे रोज़े, शव्वाल के महीने में छे दिन रोज़ा रखना मुस्तहब है और बड़ा सवाब है।

प्रश्नः बाज लोग कहते हैं कि शव्वाल के छे रोज़े रखने के लिए ईद के दूसरे दिन का रोज़ा ज़रूरी है, सही क्या है?

उत्तरः शव्वाल महीने के छे रोज़े रखने के लिए ईद के दूसरे दिन का रोज़ा ज़रूरी नहीं है, इसी तरह यह छ रोज़े चाहे लगातार रखे जाएं और चाहे नागा कर के शव्वाल के महीने में छे रोज़े पूरे कर लिए जाएं, दोनों सूरतों में मुस्तहब का सवाब मिलेगा।

प्रश्नः अगर कोई शव्वाल के महीने में छे रोज़े न रख सके तीन या चार रोज़े रखे तो उस को सवाब मिलेगा या नहीं?

उत्तरः शव्वाल के महीने में छे रोज़े रखना मुस्तहब है छे से कम रोज़े रखने पर भी सवाब मिलेगा जितने रोज़े रखे जाएंगे उन का सवाब मिलेगा।

प्रश्नः ईद के दिन रोज़ा रखने का क्या हुक्म है?

उत्तरः ईद के दिन रोज़ा रखना हराम है, साल के पाँच दिनों में रोज़ा रखना हराम है, पहली शव्वाल (ईद का दिन), दस जिलहिज्जा (बकरईद का दिन) 11,12,13 जिलहिज्जा के दिन। इन पाँचों दिनों में रोज़ा रखना हराम है।

प्रश्नः एक शख्स ने वुज़ू किया फिर उसको पाखाने के मुकाम पर दवा लगाने की जरूरत पड़ी और उसने उंगली से दवा लगा दी, क्या उसका वुज़ू टूट गया?

उत्तरः हनफी उलमा की तहकीक यही है कि पाखाने के मुकाम पर दवा लगाने से वुज़ू नहीं टूटता चाहे उंगली से दवा लगाई जाए।

प्रश्नः इस्लाम में दाढ़ी रखने का क्या हुक्म है?

उत्तरः हदीस में है, अनुवादः "हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि0 से मन्कूल (वर्णित) है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुशरीकीन (अनेकेश्वरवादियों) की मुख़ालफत (विरोध) करो, भर पूर दाढ़ी रखो और मोछें पस्त (छोटी) करो"। (बुखारी मुस्लिम)

इस तरह की और भी रिवायतें हैं लिहाजा उलमा ने लिखा है कि दाढ़ी रखना इस्लामी शिआ़र (दीन की ज़रूरी बातों) में से है और वाजिब है, दाढ़ी मुंडाना हराम है और कतर कर एक मुश्त से कम करना मकरूहे तहरीमी है और बड़ा गुनाह है।

प्रश्नः नाफ (नाभि) के नीचे बालों का क्या हुक्म है?

उत्तरः बालिग़ मर्द और औरतों की नाफ के नीचे बाल निकल आते हैं उन का हर हफ़्ते साफ करना मुस्तहब है और अगर चालीस दिन तक साफ़ न किये जायें तो गुनाह होगा, मर्द इन बालों को उस्तुरे या ब्लेड मशीन से साफ करें आज कल इन बालों को साफ करने के

लिए लोशन या साबुन वगैरा बाजार में मिलते हैं उनसे भी साफ कर सकते हैं, औरतें ब्लेड या उस्तुरा न इस्तेमाल करें, वह लोशन या साबुन वगैरा से साफ करें।

प्रश्नः बगल के बालों का क्या हुक्म है?

उत्तरः बगल के बालों (इब्त के बालों) को भी हर हफ़्ते साफ करना चाहिए और चालीस दिनों से ज़ियादा बगल के बालों को भी छोड़े रखना मक्रूहे तहरीमी है, बगल के बाल उखेड़ कर साफ करना चाहिए। लेकिन उस्तूरे या लोशन वगैरा से साफ करना भी दुरूस्त है।

प्रश्नः नाखून काटने का क्या हुक्म है?

उत्तरः नाखुन काटना सुन्नत है, अच्छा यह है कि हर हफ्ते नाखुन काट दिये जाएं, चालीस दिन से ज़ियादा नाखुनों को छोड़े रखना मक़रूह है, नाखुन हाथ के भी काटे जाएं और पैरों के भी। हाथ के नाखुन बढ़ाने से उन के जरीये गन्दगी खाने में मिल कर पेट में जा सकती है जिस से बीमारी पैदा हो सकती है लिहाजा तिब्बी लिहाज से हाथ के नाखुन हर हफ्ते काट देना चाहिए।

प्रश्नः फर्ज गुस्ल करने का क्या तरीका है?

उत्तरः फर्ज गुस्ल करने के लिए पहले बदन पर लगी नजासत दूर करें, जो कपड़ा पहन कर नहाएं, उसको भी पाक करें फिर वुजु करें, गरारा करें नाक के अन्दर पानी पहुंचाएं फिर पूरे जिस्म को तीन बार धोएं, अगर कोई मजबूरी हो तो गरारे के साथ कुल्ली और नाक में पानी पहुंचाने के बाद एक बार भी पूरे बदन पर पानी बहाने से गुस्ल हो जाएगा अगर रोज़े से हों तो गरारा न करें न नाक में नथनों में पानी पहुंचाएं।

मुसलमानों को मुसलमान....

इस समय का एक अहम काम यह है कि क़ौमी मुसलमानों को मुसलमान बना दिया जाए और "ऐ मुसलमानों! मुसलमान बनों" की आवाज़ को पूरे ज़ोर व शोर से बुलन्द किया जाए और यह काम अंजुमन बनाने, चन्दा इकट्ठा करने और कांफ्रेंसों से अंजाम नहीं पाएगा, इसके लिए ज़रूरत है इखलास की, जिम्मेदारी के अहसास और उस तड़प व बेकली की जो अल्लाह की महब्बत, अल्लाह का ख़ौफ़, अल्लाह का इख़लास (अल्लाह ही की जात सब कुछ करने वाली है) अल्लाह के साथ तअल्लुक और इस सब से अल्लाह की रज़ा के सिवा कुछ भी मतलूब व मक़सूद न हो।

(तामीर–ए–हयात फरवरी 17 से ग्रहीत)

एकत्व तथा सार्थकता.............

इस समय मिल्लते इस्लामिया की सब से बड़ी आवश्यकता यह है कि खुदनुमाई (आत्म प्रदर्शन) व्यर्थ प्रदर्शन तथा खाली खूली शोभा से बचें और इस युग की आपत्तियों तथा विपत्तियों को समझने का प्रयास करें और उन को दूर करने के लिए पूरी बुद्धिमानी से स्वार्थ रहित हो कर उनके समाधान के उपाय ढूंढे जाएं उम्मत को एकत्व (वहदत) तथा सार्थकता (मक्सदीयत) की भी बड़ी आवश्यकता है, ताकि हम शुदृढ़ हों और किसी भी शत्रु से सामना करने के लिए उम्मत इस प्रकार सामने *आए जिस* प्रकार पवित्र कुर्आन की इस आयत में बताया गया है, अनुवादः "जैसे वह सीसा पिलाई दीवार हों"।

(अस्सफ्फ:4)

मुस्लिम खवातीन-मसाइल और हल
(मुस्लिम महिलाएं समस्याएं और समाधान)

–मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

–हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

महिलाओं पर पश्चिमी धावाः-

सांस्कृतिक उन्नति में मुस्लिम महिलाओं का उल्लेख आज शीर्षक पर है, विश्व राजनीति में भी उन का उल्लेख बड़ा महत्वपूर्ण हो गया इस्लामी तारीख के आरम्भ ही से संसार की बड़ी शक्तियों के नेताओं की विनाशकारी कार्यवाहियां ढकी छुपी नहीं है, अपितु उन की वह विनाशकारी गतिविधियां स्पष्ट रूप में प्रकाश में आ चुकी हैं उन लोगों ने प्रथम चरण में पवित्र कुर्आन में परिवर्तन (तहरीफ) की बात छेड़ी और पूरी निपुणता तथा सूक्षदर्शिता के साथ कुर्आन की आयतों के अर्थ में अपने विचार मिला कर प्रस्तुत किया ताकि साधारण जन तथा कुछ मुख्य लोग भी उनके धोखे में आजाएं। आज भी यह धोखा देने वाले आधूनिक रूप में सक्रिय हैं यह धोखे देने वाले नेता यहूदी समुदाय के वह लोग हैं जिन्होंने ईसाई मिशनरी के स्कूलों और कालिजों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और कुर्आन और हदीस का गहरा तथा विस्तृत अध्ययन किया और केवल इस लिए यह अध्ययन किया ताकि मुसलमानों में अपनी चालाकी से इस्लामिक विश्वास में संदेह तथा शंका उत्पन्न करके उस की जड़ों को कमज़ोर करे दें और इस्लाम के सत्य तथा उस की वास्तविकता और मौलिक समस्याओं की उस की व्यापकता को संदिग्ध कर के प्रस्तुत कर सकें, इधर कई वर्षों से इन लोगों ने महिलाओं पर धावा बोल दिया और उन को वाद विवाद का विषय बना रखा है।

भले समाज के निर्माण में महिलाओं का योगदानः-

मुस्लिम महिलाएं भले समाज के निर्माण में केवल आधारभूत ही नहीं हैं अपितु इस्लामी सभ्यता के दुर्ग की पहली ईंट के समान हैं। यूरोप के इन नेताओं ने विस्तृत अध्ययन के पश्चात नारी के इस स्थान को समझा और समस्या की जटिलता को समझते हुए अबला नारी को अपना विषय बनाया मुस्लिम महिलाओं के लिए इस प्रकार योजनाएं बनाई और उनके सामने उन को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह इस्लाम की मान्यताओं के विरुद्ध उठ खड़ी हो चाहे उन मान्यताओं का संबंध मर्द और औरत के समान अधिकारों से हो या हिजाब अर्थात निकाब पहनने, स्कार्फ लगाने और चादर ओढ़ने से हो और घरों में रह कर सुरक्षित जिन्दगी गुजारने से हो या औरत के भाग को मर्द के भाग से कम दिखला कर वरगलाने से सम्बन्धित हो उन्होंने इन विचारों को गुप्त रूप से प्रसारित किया और तथा कथित मुस्लिम ऐजेन्सियों द्वारा इस्लामिक समाज में उसको फैलायां और कुछ ना समझ औरतों

को अपना शिकार बना लिया।

एक ओर हम उन मुस्लिम महिलाओं के सुनहरे इतिहास का अध्ययन करते हैं जिन्होंने इस्लामिक ज्ञान में निपुणता प्राप्त की और तफ्सीर और हदीस में इमामत (नेतृत्व) का स्थान प्राप्त कर के इस्लामिक इतिहास में महत्वपूर्ण कार्य किया तो दूसरी ओर हम देखते हैं कि इस संसार में कुछ मुस्लिम महिलाएं भौतिकता से प्रभावित हो कर समाज तथा जीवन के हर विभाग में पश्चिमी नारियों का अनुकरण करने पर तत्पर हैं और पति की अवज्ञा करते हुए हिजाब के निकाब (आवरण) को दूर फेंक चुकी हैं। जो उनकी सतीत्व की सुरक्षा का साधन था और दूसरे मर्दों के साथ संसार के तमाम कामों में शरीक होने के लिए प्रयास कर रही हैं लेकिन यूरोप की स्त्रियों की दशा के कड़वे अनुभव से इस प्रयास में कुछ कमी भी आने लगी है और मर्द तथा औरत के समान अधिकार की मांग में कुछ नर्मी आई है। अलबत्ता जो मुस्लिम परिवार पश्चिमी सभ्यता से क्रुद्ध हो कर इस्लामिक सभ्यता को अपना चुके हैं वह उस को सीने से लगाए हुए हैं लेकिन उन को उसकी सुरक्षा के लिए बड़े जतन करने पड़ते हैं। उपद्रवी लोग तथा भौतिकवादी राजनीतिज्ञों की ओर से कल्पित अत्याचार से पीड़ित घर के घरोंदों में बन्द मुस्लिम महिलाओं पर कृपा तथा दया का प्रदर्शन और उन की स्वंतंत्रता का नाद उन की भलाई के लिए नहीं अपितु इस शीर्षक द्वारा यह सिद्ध करना है कि इस्लाम मुस्लिम महिलाओं पर अत्याचार को उचित ठहरात है और उन को अंधेरे काल में ला खड़ा करता है। यूरोप वह स्थान है जहां औरत को पशुओं की भांति बेचा और खरीदा जाता था और बहुत ही घटिया कामों पर उन को लगाया जाता था। और उनको समाज का एक तुच्छ तत्व समझा जाता था वहीं के लोग आज इस्लाम के स्वच्छ आचरणों मे कीलें निकालने का प्रयास कर रहे हैं।

नारी स्वतंत्रता का छल युक्त नाद तथा नकारात्मक प्रभावः-

आधुनिक भौतिक वादी विश्व नेताओं का दृष्टिकोण यह है कि आज मुस्लिम महिलाएं पीड़ित तथा विवश रह कर समाज में रूढ़िवादियों की गतिविधियों का यंत्र बनी हुई हैं अतः उनके जीवन से अत्याचार और रूढ़िवादियों के चंगुल से निकालना और उनको सांसारिक समाज में प्रत्यक्ष करना अतिआवश्यक है ताकि वह राजनीति में भाग ले कर मर्दों के अनुभओं से लाभान्वित हों तथा समस्त क्षेत्रों में अपनी जीवन नौका को आगे बढ़ाएं परन्तु अगर उन मुस्लिम महिलाओं के हितैषियों का उद्देश्य यह है कि वह इसी प्रकार लज्जा रहित अश्लीलता का जीवन गुज़ारें जिस प्रकार एक पश्चिमी महिला अपने दिन रात गुजारती है तो उन को मालूम होना चाहिए कि हमारी शाश्वत पवित्र जीवन प्रणाली व्यवस्था इस की कदापि अनुमति नहीं देती और पुरुष तथा नारी का

प्राकृतिक स्वभाव भी इसे स्वीकार नहीं करता पश्चिम में महिला स्वतंत्रता का छल युक्त नाद लगाया गया और उस का परिणाम बड़े भयंकर रूप में सामने आया।

कोयत से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका "अलमुजतमा" में "जिन्सी हवस परवरी (काम प्रियता) के परिणाम" के शीर्षक के अंतर्गत लिखा है कि अमरीका में 20 प्रतिशत लड़कियां व्यभिचार में ग्रस्थ होती हैं और हर वर्ष दस लाख नव युवतियां अवैध मार्ग से गर्भित होती हैं जिन में से 56 प्रतिशत सामान्य रूप से बच्चा जनती हैं और 30 प्रतिशत लड़कियां गर्भ को नष्ट करा देती हैं और 14 प्रतिशत गर्भपात करा देती हैं। व्यस्क अवस्था के निकट पहुंचने वाली अधिकांश लड़कियों को अवैध गर्भ होता है, गर्भपात की इस प्रक्रिया में सत्तर करोड़ डालर वार्षिक खर्च होता है। बरतानिया (ब्रिटेन) में हर वर्ष व्यस्क अवस्था के निकट पहुंचने वाली साठ हजार युवतियां अवैध रूप से गर्भित होती हैं, उनमें से 45 प्रतिशत लड़कियां गर्भपात कराती हैं और हर वर्ष एक लाख नव्वे हज़ार लड़कियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं घटती हैं और हर वर्ष तलाक का अनुपात 51 प्रतिशत है और इससे प्रभावित होने वाले बच्चे एक लाख सैंतालीस हजार हैं।

यह केवल संक्षेप में एक संकेत है अन्यथा पश्चिम में काम अपराध का ग्राफ इस तीव्र गति से बढ़ रहा है कि उसे पृष्ठ तो क्या प्रतियों में भी नहीं लिखा जा सकता है, अपराध प्रेमियों की हार्दिक इच्छा है कि इस दुष्कर्म तथा अपराध के समुद्र की लहरें संयमी घरानों को भी अपनी चपेट में ले लें वह चाहते हैं कि मुस्लिम महिलाएं लज्जा के आवरणों को उतार कर मार्केट की शोभा बने देश के निर्माण के बहाने निर्लज्जा तथा दुष्कर्म के अड्डों पर उपस्थित हों और अपने भ्रष्ट कामों का प्रदर्शन करें। यह पश्चिमी नेता मुस्लिम महिलाओं के लिए बड़ी उदारता दिखा रहे हैं और यह सिद्ध करना चाहते हैं कि वह मुस्लिम समाज के नवयुकों को भला मानव बना रहे हैं जब कि वह मुस्लिम नवयुवकों और नवयुवतियों को पथ भ्रष्ट करने में लगे हुए हैं।

कन्या हत्या नहीं अपितु वंश हत्याः-

इसी प्रकार कुछ मुस्लिम अल्पसंख्यक देशों विशेष कर हमारे देश हिन्दोस्तान में भ्रूण हत्या का बड़ा दुखद चलन चल पड़ा है यह विनाशकारी रोग इस भय से चल पड़ा है कि कहीं बच्चियां हमारे लिए बोझ न बन जाएं इसलिए कि वह बच्चियों की शादी (विवाह) के खर्च की शक्ति नहीं रखते साथ ही भारी जहेज की कुप्रथा से भी वह भयभीत हो कर बच्ची की भ्रूण हत्या के लिए तैयार हो जाते हैं यद्यपि हमारे शासन में कन्या भ्रूण हत्या और जहेज को रोकने के लिए कानून बना रखा है और इस में किसी हद तक सफलता भी मिली है।

सामाजिक निर्लज्जता इस सीमा तक पहुंच चुकी है कि होने वाला पति अपने घर वालों के साथ अपनी मांगें

पूरी कराने के लिए हर प्रकार की संभावित उपायों को अपनाता है और किसी भी दशा में अपनी मांगें छोड़ने पर तैयार नहीं होता।

अगर शौहर (पति) की ओर से शादी रिश्ते को तोड़ देने का भय न होता तो लड़की वाले लड़के (होने वाले पति) की मांगें सरलता से पूरी न करते अतएव जब शादी की सभी मांगें समय पर पूरी कर दी जाती हैं तो परस्पर प्रेम तथा प्रसन्नता का भाव दिखने में आता है। अन्यथा इसके विपरीत दोनों परिवारों में दूरी, स्वभाव में कठोरता तथा अप्रसन्नता का प्रकटीकरण सामने आता है विशेष कर दुल्हन का जीवन शंका में पड़ जाता है।

यह वह परिस्थिति है जिससे आज मुस्लिम समाज भी पीड़ित है परन्तु यह रोग गैर मुस्लिम समाज में बड़ी तीव्रता से फैल रहा है प्रायः समाचार पत्रों में दुल्हनों के मारे जाने या जलाए जाने की सूचनाएं प्रकाशित होती हैं। इसी प्रकार भ्रूण हत्या की घटनायें होती हैं। जब अल्ट्रासाउंड द्वारा भ्रूण की लिंग की जानकारी हो जाती है कि वह बच्ची है तो उसको रास्ते से हटाने के लिए गर्भपात करवा कर उस की हत्या कर दी जाती है। यद्यपि शासन की ओर से अल्ट्रासाउंड या किसी और माध्यम से भ्रूण की लिंग जांच करने वाले और कराने वाले कि लिए कठोर दण्ड दिये जाने की लगातार घेषणा होती रहती है फिर भी यह कुकर्म गुप्त रूप से जारी है। कभी ऐसा भी होता है कि बच्ची के जन्म के बाद किसी और उपाए से उस को रास्ते से हटा दिया जाता है।

मुर्खता काल में नारी के साथ असभ्य व्यवहारः-

इस्लाम से पहले अरब देश में कुछ लोग नन्ही बच्ची को जीवित मार देते थे इस ख़्याल से कि बच्ची का बेजा बोझ उठाना पड़ेगा या इस ख्याल से कि बच्ची बड़ी होगी तो किसी को दामाद बनाना होगा या इस ख्याल से कि वह बड़ी हो कर प्राये घर जाएगी और वहं उस को पीड़ित किया जाएगा इन ख्यालों से कुछ मूर्ख बच्चियों का जीवन समाप्त कर देते थे। एक अरब देश क्या सारे संसार में नारी की दशा अकथनीय थी। इस्लाम के आने के बाद बच्चियों को जीवित रहने का अधिकार मिला परन्तु यह वास्तविकता है कि जब भी दीने इस्लाम से विमुखता अपनाई जाएगी तो मूर्खता काल के असभ्य व्यवहार फिर जन्म लेने लगेंगे। इस समय मुस्लिम समाज के कुछ दीन से दूरी रखने वाले मुसलमानों मे भी यह रोग लौट आया है लेकिन लोगों को मालूम होना चाहिए कि जब भी मानवीय समाज में बच्चियों को मार देने की यह अत्याचारी परिस्थिति पाई जाएगी तो यह निर्माता तथा जन्म दाता के विरुध युद्ध की घोषणा होगी और यह अल्लाह की बड़ी अवज्ञा होगी।

इक्कीस्वीं शताब्दी की मूर्खताः-

आज मुस्लिम समाज में भी कन्या विरोध की असभ्य महामारी जन्म ले रही है जो इस बात को सिद्ध करती है कि लोगों के हृदय

मर चुके हैं और मनुष्य हिंसक पशु बन गया है अपितु अपने व्यवहार में पशुओं से भी नीचे जा चुका है जिस का परिणाम यह है कि लड़कियों की संख्या लगातार घटती जा रही है यहां तक कि देश के कुछ क्षेत्रों में लड़कों के मुकाबले में लड़कियों का अनुपात 90 प्रतिशत के निकट तक पहुंच चुका है। ऐसी दशा में हर युवक की शादी असम्भव हो जाएगी और जिन युवकों की शादी न हो सकेगी वह दुष्कर्मों का रुख करेंगे और समाज विकृत होगा।

मूर्खता काल में मनुष्य दलों तथ गुटों में बंटे हुए थे और उस समय श्रेष्ठता का मापदण्ड केवल धन, बल पद था नारी बड़ी ही उत्पीड़ित तथा कर्महीन थी उस को सेवा तथा घटिया कामों के लिए रखा जाता था उसके साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया जाता था जब इस्लाम आया तो उसने नारी को उच्य स्थान प्रदान किया उसके अस्तित्व को मृदुल दर्पण तथा सुरक्षित रखने वाला हीरा ठहराया अतः मुस्लिम महिला की सुरक्षा और उस का सम्मान इस्लामिक दृष्टि से अत्यावश्यक है और यह काम मुस्लिम नारी के निकटी और उसके घर वाले ही कर सकते हैं जो उनके सम्मान को अपना सम्मान और उनके अपमान को अपना अपमान समझते हैं और वह इस पर किसी प्रकार राजी नहीं हो सकते कि वह गैरों के हाथों का खिलौना बनें जो लोग मुस्लिम महिला की पर्दे वाली दशा पर अपनी कृपा जता रहे हैं और उस के इस्लामिक समाज के निर्माण के काम को अत्याचार बता रहे हैं वह वास्तव में आत्महीनता का शिकार हैं और मुस्लिम महिला को अश्लीलता की गहरी खाई में ढकेलना चाहते हैं वह उस को पश्चिमी महिला की भांति निर्लज्ज बनाना चाहते हैं जब कि पश्चिमी महिलाएं ऐसी गन्दगियों में लतपत हैं कि जिन को देख कर पशु भी लज्जा करें।

आख़िर मुस्लिम महिलाओं को घर की शोभा से निकाल कर बाजार की शोभा बनाने का क्यों आग्रह किया जा रहा है परिवार तथा समाज के निर्माण के कार्य की अनदेखी करते हुए यह कार्य उन से क्यों छीना जा रहा है और उन को विधायक, सांसद तथा नगर निगम का सदस्य बनने पर क्यों जोर दिया जा रहा है या किसी क्षेत्र की चियर पर्सन बनने के लिए उन को क्यों उभारा जा रहा है इसी लिए न कि राजनीति के नेताओं, विधायक मर्दों और सांसद मर्दों से उन का समागम रहे और वह अपने पति तथा बच्चों को, वातावरण को समर्पण कर दें और इस्लामी हिजाब (नारी आवरण) को सलाम कर लें। अल्लाह तआ़ला ने पवित्र कुर्आन में अपने प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित कर के महिलाओं के पर्दे के विषय में स्पष्ट रूप से फरमाया, अनुवादः "आप ईमान वाली स्त्रियों से कह दीजिए कि वह अपनी निकगाहें नीची रखें और अपने शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करें और अपने श्रृंगार प्रकट न करें, सिवाय उस के जो उन में

खुला रहता है। और अपने सीने पर अपने दुपट्टे डाले रहें, और अपना श्रृंगार किसी पर जाहिर न करें अर्थात किसी के सामने न खोलें सिवाय अपने पतियों के या अपने बापों के या अपने पतियों के बापों के या अपने बेटों के या अपने पतियों के बेटों के या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के या अपने भांजों के या अपने मेल–जोल की स्त्रियों के या जो उन की अपनी मिल्कियत में हों उनके, या उन अधीनस्थ पुरुषों के जो उस अवस्था को पार कर चुके हों जिस में स्त्री की ज़रूरत होती है, या उन बच्चों के जो स्त्रियों के पर्दे की बातों से परिचित न हों। और स्त्रियां अपने पांव धरती पर धमक कर न रखें कि आपना जो श्रृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमान वालो! तुम सब मिल कर अल्लाह से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।" (अन्नूर:31) जो लोग मुस्लिम महिलाओं को बे पर्दा देखना चाहते हैं वह इस आयत से सबक लें।

महिलाओं की समस्या का समाधान इस्लाम में:-

मैं समझता हूं कि इस आधुनिक काल की अकथनीय दशा को घिनावनी गतिविधियों से दूर करने का प्रयास व्यर्थ है एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगीत के प्रयोग से जो जनसंख्या की अधिकता के समाधान का प्रयास किया जा रहा है उससे जनसंख्या की बढ़ोत्तरी का समाधान न होगा इसी प्रकार फैमली प्लानिंग से भी जनसंख्या की बढ़ोत्तरी का समाधान न हो सकेगा। अपितु इन प्रयासों से समाजिक विकार में अधिकता होगी तथा निर्धनता बढ़ चढ़ कर आगे आएगी आवश्यकता इस बात की है कि शुद्ध इस्लामी शिक्षाओं को अपने जीवन में जारी किया जाए और इस्लामिक शिक्षाओं के अनुकूल जीवन को चलाया जाए परन्तु इसके लिए इस्लामी शरीअ़त के न्याय प्रिय नियमों से अवगत होना अत्यावश्यक है।

क्या अच्छा होता कि आधुनिक शिक्षा से सुसज्जित हमारे साधारण जन तथा मुख्य लोग इस्लामी नियमों को अपने जीवन में ला कर अपना आदर्श जीवन प्रस्तुत कर के समाज को स्वच्छ बनाते और समाज के लिए मार्ग दर्शक बनते तो यह बड़ी सफलता की बात होती अगर हमारे मुस्लिम भाइयों ने इस ओर ध्यान न दिया और इस्लामिक कल्चर को न अपनाया तो बड़े बुरे परिणाम का भय है और फिर उस बुरे परिणाम से अल्लाह के अतिरिक्त कोई बचा न सकेगा। उलमा हज़रात और दीन का काम करने वाली जमाअतों से उम्मीद है कि वह साधारण मुसलमानों विशेष कर आधुनिक शिक्षा से सुसज्जित मुख्य लोगों से मिलकर उन को उन खतरात से अवगत कराएंगे और सच यह है कि इस दिशा में उन के प्रयास जारी हैं अल्लाह उनकी मदद करे और मुसलमानों को इस्लामिक शिक्षाएं अपनाने का सामर्थ्य दे। आमीन

❖❖❖

अपने जीवन में माता-पिता का सम्मान कीजिए

—मुहम्मद नफीस हरदोई

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

अल्लाह तआला ने जहां मनुष्य को बहुत से पुरस्कार तथा उपकार प्रदान किए वहीं एक महान उपकार यह किया कि माँ—बाप जैसी अमूल्य पूंजी प्रदान की मनुष्य यदि उन के अधिकारों तथा उपकारों का बदला देने में पूरा जीवन बिता दे तब भी उन का हक़ अदा नहीं कर सकता। माँ—बाप मनुष्य के लिए अल्लाह तआ़ाला का महान वरदान हैं माँ न हो तो दिल को दिलासा (सांत्वना) दिलाने वाला कोई नहीं तथा बाप न हो तो जीवन की दौड़ में अच्छा परामर्श देने वाला कोई नहीं, माँ जीवन मार्ग की अंधेरियों में प्रकाश स्तंभ है तो बाप ठोकरों से बचाने वाला सुदृढ़ सहारा है, माँ यदि प्रेम की सरिता है तो बाप कृपा का समुद्र है माँ यदि रब की दया का प्रतीक है तो बाप रब की दया का उपहार है, माँ यदि अपनी संतान पर दयावान है तो बाप अपनी संतान पर कृपाशील, माँ पर यदि मुझे गर्व है तो बाप पर मुझ को अभिमान, माँ के चरणों के नीचे जन्नत है तो बाप जन्नत का दरवाजा है अर्थात माँ—बाप की सेवा से जन्नत में प्रवेश मिलता है।

अल्लाह के अधिकारों (हुकूकुल्लाह) के पश्चात बन्दों के अधिकारों (हुकूकुल इबाद) में सबसे बड़ा हक (अधिकार) माता पिता (वालिदैन) का है, अपनी संतान के लिए वही सबसे बड़े उपकारी हैं जो अपनी संतान के पालन पोषण तथा देख रेख में हर प्रकार के कष्ट को सहन करते हैं, संतान की प्रसन्नता के लिए अपना विश्राम बलि पर चढ़ा देते हैं, माँ—बाप के लिए उनकी संतान उन के हृदय का टुकड़ा तथा नेत्रों का प्रकाश होती है, बाप दिन रात अपने श्रम द्वारा अपना और अपनी संतान का पेट पालता है, दर दर की ठोकरें खाता है ताकि बच्चे भूखे न रहें, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाप के सम्बन्ध में फरमाया अनुवादः "रब की प्रसन्नता (रिजा मंदी) बाप की प्रसन्नता में है और रब की अप्रसन्नता बाप की अप्रसन्नता में है"।

(तिर्मिजी)

इसी प्रकार माँ है कि वह अपना रक्त बहा सकती है परन्तु अपने बच्चे की आंख में आंसू नहीं देख सकती मां बच्चे के लिए महान वरदान है वह अपने बच्चे के पैर में कांटा चुभ जाने पर भी बेचैन और व्याकुल हो जाती है, बच्चा अगर नाराज हो जाए तो मां अपना खाना पीना छोड़ कर बच्चे को मनाने में लग जाती है। अल्लाह तआ़ाला ने मां के अन्दर वह ममता रखी है कि रक्ताहारी हिंसक बाघनी मां भी अपने बच्चे को अपनी छाती से लगा कर रखती है।

इसी प्रकार पशु पक्षी तथा जल थल के जीव यहां तक विषैले जीव जन्तु भी अपने प्राणों से अधिक अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं। अतः संतान के लिए आवश्यक है कि वह अपने मां बाप का आदर सम्मान करे उनके स्थान, पद और उनकी श्रेष्ठता को पहचाने उन की वैध इच्छाओं की पूर्ति करे, उनके आज्ञापालन तथा उनके अनुकरण को अपने लिए अनिवार्य समझे, उनकी प्रसन्नता को अपने लिए भलाई का साधन जाने।

पवित्र हदीस में आया है कि हज़रत जाहिमा रज़ि0 ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आवेदन किया कि मैं जिहाद में जाना चाहता हूं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तुम्हारी मां जीवित हैं? उन्होंने कहा, जी हां, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "मां की सेवा में लग जाओ इसलिए कि जन्नत मां के पैरों तले है"। (नसई तथा अन्य पुस्तकें)।

इसी लिए माँ–बाप की राहत व आराम अर्थात उन को सुख पहुंचाने में संतान को चाहिए कि जितना संभव हो सके अपना माल खर्च करे, उनके साथ सद्व्यवहार करे उनके सामने कोई अशिष्ट कार्य न करे उन से अशिष्टता का व्यवहार न करे और न अपने अहंकार का प्रकटीकरण करे, अपनी आवाज़ उनकी आवज़ से ऊँची न करे, उनका नाम ले कर न पुकारे और न उनके सामने अपने को बड़ा दिखाने का प्रयास करे। यदि माँ बाप गैरमुस्लिम हों तब भी उन के साथ सद्व्यवहार करे शिष्टता तथा सदुपाय के साथ उनको भलाई की ओर बुलाने तथा बुराईयों से रोकने का प्रयास करते रहें फिर भी अगर माँ–बाप शिर्क व कुफ्र न छोड़ें तो खामोश रहें जब्र न करें पवित्र कुर्आन में है, अनुवादः "दीन में जबरदस्ती नहीं"।

(अलबकराः 256)

उनके आदेशों का पालन करते रहें अलबत्ता यदि इस्लामी शरीअत के विरोध में कोई आदेश दें तो उन की बात न माने इस लिए कि "अल्लाह की नाफरमानी में किसी मखलूक़ की बात न मानी जाएगी अर्थात किसी सृष्टि के आदेश पर अल्लाह की अवज्ञा न की जाएगी। पवित्र कुर्आन में है, अनुवादः "किन्तु यदि वे तुम पर दबाव डालें कि तुम किसी को मेरे साथ साझी ठहराओ, जिस का तुझे ज्ञान नहीं, तो उन की बात न मानना" (लुकमानः 15) परन्तु इस का अर्थ यह नहीं कि तु उनको कष्ट पहुंचाए, दुख दे सेवा में कमी करे इस लिए कि माँ–बाप को कष्ट पहुंचाना महा पाप है और वर्जित (हराम) है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्लाह तआ़ला ने तुम पर माँओं की नाफरमानी हराम की है। (बुखारी व मुस्लिम)

एक दूसरे मौक़े पर फरमायाः "अल्लाह तआला जिस पापी को चाहेगा उसको देर से सजा देगा परन्तु मां बाप की अवज्ञा

करने वाले पापी को सजा देने में जल्दी करेगा और उसको उसके मरने से पहले इस संसार में भी दण्ड देगा" (बैहकी) इस हदीस में माँ–बाप की अवज्ञा करने वालों केलिए कितनी कठोर चेतावनी है उसको आखिरत में दण्डित तो किया ही जाएगा। इस संसार में भी अपने मरने से पहले उसको सजा भुगतना होगी, माँ–बाप का आशिर्वाद तथा श्राप दोनों अल्लाह के यहां स्वीकृत प्राप्त करते हैं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "कि तीन विनय अल्लाह तआला के यहां स्वीकृत प्राप्त करती हैं उत्पीड़ित की विनय, यात्री की विनय और माँ–बाप की विनय अपनी संतान के लिए" (तिर्मिजी)। (विनय आशिर्वाद की हो चाहे श्राप की हो)।

यद्यपि माँ–बाप अपनी संतान को श्राप नहीं देते परन्तु यदि अपनी संतान के दुर्व्यवहार से दुखी हो कर श्राप देंगे तो वह श्राप अल्लाह तआला के यहां स्वीकार हो जाएगा और संतान पर पड़ कर रहेगा, संतान को चाहिए कि वह अपनी सेवाओं से अपने मां बाप को प्रसन्न रखें ताकि उन से आशिर्वाद पाएं।

संतान को चाहिए कि सदैव अपने माँ–बाप का आज्ञा कारी रहे, अवज्ञा न करे, हदीस में आया है जिस को बैहकी ने लिखा है कि "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला को राजी रखने के लिए अपने माँ–बाप का आज्ञा कारी हो तो जन्नत के दरवाज़े उस के लिए खोल दिए जाते हैं और जो माँ बाप की अवज्ञा करे तो उसके लिए जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और अगर माँ–बाप में से एक ही हो तो उस के आज्ञापालन या अवज्ञा करने का भी यही परिणाम होगा" एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अगर माँ–बाप अपनी संतान पर अत्याचार करें तब भी उन की अवज्ञा पर यही सजा मिलेगी? आपने उत्तर में तीन बार कहा, चाहे वह अत्याचार करें चाहे वह अत्याचार करें, चाहे वह अत्याचार करें तब भी उनके साथ दुर्व्यवहार करने पर यही सजा मिलेगी"।

संतान को माँ–बाप से उनके अत्याचारों का बदला लेने का हक नहीं है, क्या माँ–बाप अपनी नासमझी से अपनी संतान पर अत्याचार करें तो क्या संतान भी अपने माँ–बाप पर अत्याचार करेगी? नहीं कदापि नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार फ़रमाया "वह रुस्वा हुआ, वह रुस्वा हुआ, वह रुस्वा हुआ," सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी कौन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस ने अपने माँ–बाप को उनके बुढ़ापे में पाया या उन में से एक को पाया और उन की सेवा कर के अपने को जन्नत का अधिकारी न बना सका"। (मुस्लिम) ज्ञात हुआ कि माँ–बाप की सेवा जन्नत पाने का साधन है एक व्यक्ति

ने आप की सेवा में उपस्थित हो कर पूछा "ऐ अल्लाह के नबी संतान पर उनके माँ–बाप का क्या हक़ है"। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "वह दोनों तेरी जन्नत हैं या जहन्नम" (इब्नि माजा) अगर उनकी सेवा करेगा तो वह जन्नत हैं परन्तु यदि उन की अवज्ञा करोगे और उन से दुर्व्यवहार करोगे तो वह तुम्हारे लिए जहन्नम का कारण हैं।

माँ–बाप के महत्व का अनुमान इस हदीस से भी कीजिए कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल "सब से अच्छा काम कौन सा है?" नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया "नमाज़ का पढ़ना उन्होंने कहा फिर? फरमाया "माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार" उन्होंने पूछा फिर? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, "अल्लाह की राह में जिहाद" (तिर्मजी)।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँ–बाप के हुकूक को बड़ा महत्व दिया यहां तक कि अल्लाह की राह में जिहाद करने के वर्णन से पहले माँ–बाप से सद्व्यवहार को वर्णित किया एक ओर अल्लाह के नबी ने माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार को नमाज़ के साथ वर्णित करके उस का महत्व बताया तो दूसरी ओर माँ–बाप की अवज्ञा को अल्लाह के साथ शिर्क के साथ वर्णित कर के उस का दोष बताया अतएव अल्लाह के नबी ने फरमाया "क्या मैं तुम को सब से बड़े पाप न बता दूँ? "सहाबा ने कहा अवश्य बताइये, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराना और माँ–बाप की अवज्ञा करना"। (तिर्मिजी)

इन हदीसों से सीख लेना चाहिए न लोगों को जो अपने माँ–बाप को, माँ–बाप कहने में अपना अपमान समझते हैं उन को अपने लिए बोझ समझते हैं, परन्तु उन को ज्ञात होना चाहिए कि जैसा बरताव वह अपने माँ–बाप के साथ करेंगे वैसा ही बरताव वह अपनी संतान से पाएंगे, अल्लाह के नबी ने एक बार फरमाया "बाप तुम्हारे लिए जन्नत का दर्मियानी दरवाज़ा है चाहो तो उसे नष्ट कर दो या उस की सुरक्षा करो"। (तिर्मिजी)

जब बाप का यह स्थान तथा सम्मान है तो माँ का स्थान तथा सम्मान इससे तीन गुना अधिक है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आ कर अल्लाह के नबी से पूछा, "लोगों में सब से अधिक मेरे सद्व्यवहारों का अधिकारी कौन है? उत्तर मिला "तेरी माँ" उसने पूछा, फिर कौन? उत्तर मिला "तेरी माँ" उसने पूछा, फिर कौन? उत्तर मिला "तेरी माँ" उसने पूछा, फिर कौन? अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "तेरा बाप" (बुखारी)। माँ पर तीन काल ऐसे आते हैं जिन को वह बड़े परिश्रम के साथ सहन

करती है, पवित्र कुर्आन ने उनको इस प्रकार बयान किया है। अनुवादः "

1. माँ ने अपने बच्चे का (कई महीनों तक) बड़े परिश्रम से अपने पेट में उठाए रखा।

2. फिर माँ ने अपने बच्चे को बड़े कष्टों और परिश्रम के साथ जन्म दिया।

3. उस गर्भ और दूध पिलाने के साथ कम से कम 30 महीने हैं। (सूरतुल अहकाफ़)

माँ अपने बच्चे के लिए गर्भ के कष्टों को उठाती है उसको जनने के कष्ट उठाती है, दूध के रूप में अपना रकत पिलाती है, यह वह कार्य हैं जिन्हें बाप नहीं कर सकता, तभी तो मां का दर्जा बाप से तीन गुना अधिक है। सर्द रातों में वह अपने बच्चे का ओढ़ा पहना कर गर्म रखती है उसके पेशाब के गीले बिछौने पर खुद सोती है और बच्चे को सूखे बिछौने पर सुलाती है, गर्मियों में पूरी रात अपने दोपट्टे से उस को हवा देती है, जब बच्चा बड़ा होने लगता है और कुछ खाने लगता है तो उस के लिए विशेष भोजन तैयार कर के बड़े प्यार से उसे खिलाती है। जब वह बोलने लगता है तो उसकी शिक्षा का प्रबन्ध करती है। उसके नाज नखरों को सहन करती है अपने खाने से अच्छी अच्छी चीजें निकाल कर अपने बच्चे के लिए रखती है ताकि वह भूखा न रहे, दूसरे से खाने की चीजें न मांगे, दूसरों के पास अच्छी चीज़ें देख कर बच्चा ललचाए नहीं, अपनी सन्तान के लिए मां वह सब कुछ कर गुजरती है जो उस के बस में होता है, एक लम्बे समय तक उसका पालन पोषण करती है, अपना सुख चैन, अपना विश्राम, अपना खाना पीना सब कुछ अपने बच्चे पर निछावर कर देती है, अब यहां सोचना चाहिए कि जब बच्चा जवान हो कर कमाने खाने लगता है तो वह अपने मां बाप के उक्त उपकारों का क्या बदला देता है? इसी अपनी मां को अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए अपमानित करता है यहां तक कि कभी तो घर से निकाल देता है, और वह फिर दर दर की ठोकरें खाती है। बीवी को माँ पर प्रधानता देता है स्वयं अपने माँ–बाप से दुर्व्यवहार करता है उनको अपमानित करता है।

यह दुर्व्यवहार अपने माँ–बाप के साथ हर संतान नहीं करती है परन्तु कुछ कुकर्मी संतानों से ऐसा व्यवहार देखने में आता है, ऐसी संतानों और सभी संतानों को अल्लाह तआला ने मां के उपकारों को इस प्रकार याद दिलाया है और उनके लिए दुआ करने का इस प्रकार आदेश दिया "ऐ मेरे रब जिस प्रकार उन्होंने मेरे बाल काल में मुझे पाला है उन पर दया कर" (बनी इस्राईलः 24)। और आदेश दिया कि हरगिज उनको अपमानित न करना उन्होंने तुम्हारे पालन पोषण में बड़ी कठिनाईयां उठाई हैं और कष्ट सहे हैं अतः उन के साथ सद्व्यवहारं करना और उनके आज्ञापालन में कोई कोताही न करना

पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः "तुम्हरे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की उपसना न करो और माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उन में से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो ऊँह "उफ" तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टापूर्वक बात करो" (बनी इस्राईलः23) इस आयत और इसके बाद वाली आयत में अल्लाह तआला ने माँ बाप के छे अधिकार बयान किए हैंः–

1. "माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार करो" इन्सान जहां अपनी बीवी बच्चों के लिए अच्छे खाने पीने और वस्त्रों का प्रबन्ध करे तो माँ–बाप के लिए भी वैसा ही प्रबन्ध करे जो अपने लिए पसन्द करे, वही माँ–बाप के लिए भी पसन्द करे।

2. "जब माँ–बाप बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन की सेवा से उकता कर उफ तक न कहो" इस लिए कि बुढ़ापा मानव जीवन का बड़ी निर्बलता का काल होता है जब कि संतान युवा अवस्था में होती है। अतः पवित्र कुर्आन में युवा संतान से जैसे सम्बोधित हो कर कहा हो कि ऐ युवा संतान यह तेरी युवा अवस्था भी समाप्त हो जाएगी और तू भी बूढ़ा हो जाएगा जैसे तेरे माँ–बाप बूढ़े हो गए। अगर तू चाहता है कि तेरी संतान तेरे बुढ़ापे में तेरा आदर सम्मान करे तो तू भी माँ–बाप की सेवा में "उफ" न कर।

3. "और उन को झिड़को नहीं" इस आदेश में सख़्ती से रोका गया है कि अगर माँ–बाप तुम्हारे स्वभाव के विपरीत कोई बात कह दें तो क्रोधित हो कर उन को झिड़को नहीं अन्यथा कहीं वह श्राप न दे बैठें और वह अल्लाह के यहां स्वीकार हो जाए और अल्लाह की कृपा के तमाम द्वारा तुम्हारे लिए बन्द हो जाएं।

4. "और उन से शिष्टापूर्वक बात करो" यहां उनके सम्मान का आदेश है कि अपने माँ–बाप के साथ शिष्टा पूर्वक मीठी बोली में बात करो ताकि उन के मन को सन्तोष प्राप्त हो।

5. "और उन के आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएं बिछाए रखो"।

6. "और उन के लिए दुआ करो कि ऐ मेरे रब जिस प्रकार उन्होंने बचपन में मुझे पाला है तू भी उन पर दया कर"। (बनी इस्राईलः24)

जीवित माँ–बाप बाप के लिए भी दुआ करें और वफात पाए हुए माँ–बाप के लिए मगफिरत की दुआ करें, नेकियां कर के उस का सवाब उनको बख्शें उन की वसीयत को पूरा करें, उन के सम्बन्धियों से भला व्यवहार करें उनके मित्रों का सम्मान करें, सम्भव हो तो उनकी तरफ से हज करें।

हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "अगर किसी बन्दे के माँ–बाप का इन्तिक़ाल हो जाए या उनमें से किसी एक का इन्तिकाल हो जाए और वह बन्दा अपने माँ–बाप का

नाफरमान रहा हो लेकिन अगर वह बन्दा अपने माँ–बाप के लिए दुआ करता रहे और अल्लाह तआला से उन के लिए मगफिरत मांगता रहे तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को अपने माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार करने वालों में लिख देंगे" (मिशकात)। जिन लोगों से अपने माँ–बाप की सेवाओं में चूक हुई हो और उनका इन्तिक़ाल हो गया हो उनको चाहिए कि वह अपने माँ–बाप के लिए बराबर मगफिरत की दुआ करते रहें तो उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला उनको क्षमा कर देंगे।

अल्लह तआला हम सबको अपने माँ–बाप का आज्ञाकारी उन का अनुकरण करने वाला उनके साथ सद्व्यवहार करने वाला उनके लिए जिन्दगी में भी दुआ करने वाला और उनकी वफात पर उनके लिए पूरे जीवन तक मगफिरत की दुआ करने वाला बनाए।

आमीन

❖❖❖

जीवन के अंधियारे पथ में

–इदारा

सत्य धर्म अपनाओ बन्धु, सत्य धर्म अपनाओ।
मानवता के प्रेमी बन कर, मानव तुम कहलाओ।।
भूले-भटके इन्सानों को, सत्य मार्ग दिखलाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ।।
एक ईश्वर की करो वन्दना, उसके ही गुण गाओ।
उसके ही मार्ग पर चल कर, जीवन सफल बनाओ।।
जन-जन की सेवा करके, अपना जीवन सफल बनाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ।।
चहुँदिश हाहाकार मचा है, पीड़ित है जनता सारी।
सब को है मतलब से यारी, क्या नौकर क्या व्यापारी
।।अत्याचार मिटाओ जग से, एक सभी हो जाओ।।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ।।
उठो 'मुजाहिद', मिल-जुल कर, अब ऐसा चक्र चलाओ।
नव निर्माण करो, पृथ्वी को स्वर्ग बनाओ ।।
ईश्वर का सन्देश, जगत, के घर-घर में पहुंचाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ।।

◆◆

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

हज़रत मुहम्मद अल्लाह के आख़िरी नबी हैं

حضرت محمدؐ اللہ کے آخری نبی ہیں۔

आपके बाद क़ियामत तक कोइ नबी न आएगा

آپؐ کے بعد قیامت تک کوئی نبی نہ آئے گا۔

12 रबीउलअव्वल 11 हिजरी को आपकी वफ़ात हो गई

۱۲ ربیع الاول ۱۱ ہجری کو آپؐ کی وفات ہوگئی۔

हम सब अल्लाह ही के मिल्क हैं और उसी की तरफ वापस जाने वाले हैं

ہم سب اللہ ہی کے مِلک ہیں اور اسی کی طرف واپس جانے والے ہیں۔

अल्लाह के नबी पर अल्लाह की लाखों रहमतें और लाखों सलाम हों

اللہ کے نبی پر اللہ کی لاکھوں رحمتیں اور لاکھوں سلام ہوں۔

आप के बाद तीस साल तक ख़िलाफ़ते राशिदा रही

آپؐ کے بعد تیس سال تک خلافت راشدہ رہی۔

तीस साल के बाद मुलूकीयत (बादशाहत) शुरुअ़ हो गई

تیس سال کے بعد ملوکیت (بادشاہت) شروع ہوگئی۔

ख़िलाफ़ते राशिदा में पाँच ख़ुलफ़ा हुए

خلافت راشدہ میں پانچ خلفا ہوئے۔

हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली और हज़रत हसन ख़लीफ़ा हुए

حضرت ابوبکرؓ، حضرت عمرؓ، حضرت عثمانؓ، حضرت علیؓ اور حضرت حسنؓ خلیفہ ہوئے۔

इस्लामी तारीख़ में पहले बादशाह हज़रत मुआ़विया हुए

اسلامی تاریخ میں پہلے بادشاہ حضرت معاویہ ہوئے۔

अल्लाह तआ़ला तमाम सहाबा से राज़ी हुआ वह सब जन्नती हैं

اللہ تعالیٰ تمام صحابہ سے راضی ہوا وہ سب جنتی ہیں۔